(वर्ष 35 : अक्टूबर 2023 — मार्च 2024)

अणुभारती

राष्ट्र की सेवा में परमाणु
एनपीसीआईएल
NPCIL
ATOMS IN THE SERVICE OF THE NATION
न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
Nuclear Power Corporation of India Limited

न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
तारापुर महाराष्ट्र स्थल

सेवानिवृत्त होने पर तत्कालीन स्थल निदेशक, तामस्थ श्री अनिल बी. देशमुख अपना प्रभार नवनियुक्त स्थल निदेशक, तामस्थ श्री संजय एम. मुलकलवार को सौंपते हुए

न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड
तारापुर महाराष्ट्र स्थल

अणुभारती

वर्ष 35 : अक्टूबर 2023 – मार्च 2024

मुख्य संरक्षक
संजय एम. मुलकलवार
स्थल निदेशक, तामस्थ

संरक्षक
को. व. गोपिदास
केंद्र निदेशक, तापबिघ 3व4

सह संरक्षक
अशोक एस. शिंदे
अपर महाप्रबंधक(मासं)

परामर्शदाता
जि. देवप्रकाश
उप महाप्रबंधक(मासं)

संपादक
दिनेश कुमार चौहान
वरि. प्रबंधक(राजभाषा)

संपादन सहयोग एवं समस्त डिजाइन
संगीता रावत

राजभाषा अनुभाग
अंजनी कुमार ओझा
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुभाषचंद नारवाल
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

संगीता रावत
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

संपर्क सूत्र
वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा), तारापुर महाराष्ट्र स्थल,
तारापुर परमाणु बिजलीघर 1से4
पोस्ट : टीएपीपी, बोईसर(प. रे),
जिला : पालघर(महाराष्ट्र)-401504 फोन : 02525-283135,

नोट
प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।
यह आवश्यक नहीं कि संपादक मंडल या
प्रबंधन वर्ग की उनसे सहमति हो।
(गृहपत्रिका नि:शुल्क निजी वितरण के लिए है।)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	राजभाषा कार्यान्वयन समिति		05
2	स्थल निदेशक का संदेश		06
3	संपादकीय		07
4	अपने दिमाग की दक्षता बढ़ाएं	शिव शंकरदास	08-09
5	बहू-बेटी, एक समान	संगीता ऊके	10
6	ताले की चाबी	डॉ. प्रसाद जोशी	11
7	दोहरे अर्थ	डॉ.श्याम बिहारी	12
8	गहरा ज़ख्म	धर्मराज यादव	13-14
9	बचत की शुरूआत	अमितकुमार रमेश पाटिल	14
10	खुद को कर बुलंद इतना	महेश गोपाल महांगडे	15-16
11	सादगी की प्रतिमूर्ति-लाल बहादुर शास्त्री	शरीफ खान	17-18
12	नई राह	अनुराग सक्सेना	19-20
13	राजभाषा गतिविधियों का आयोजन	अंजनी कुमार ओझा	21-22
14	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन	स्नेहल गांगुर्डे	23
15	फोटो गैलरी		24-26
16	विंट की गतिविधियाँ	हिल्डा सिक्वेरा	27
17	महिला विकास मंडल की गतिविधियाँ	कना बिस्वास	28
18	ऊर्जा महिला मंडल की गतिविधियां	अल्का खण्डेलवाल	29
19	पांच मिनट की देरी	सोमनाथ गणपत सुरोशे	30-31
20	सुनहरा सपना	चिन्मय कुमार पाति	32-33
21	स्वमूल्यांकन	राकेश कुमार	34-35
22	विचार- एक जीवन शक्ति	परशुराम खरटमल	36-37
23	विचारों की शक्ति	रविशंकर महाराना	38-39
24	ईर्ष्या से प्रेरणा	सीमा शिर्के	40
25	हमारी प्यारी लाडो	स्वाती विवेक कुंभार	41
26	प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली		42
27	सुस्वागतम		43
28	मधुर स्मृतियां		44-45

तारापुर महाराष्ट्र स्थल की राजभाषा कार्यान्वयन समिति

श्री संजय मनोहर मुलकलवार
स्थल निदेशक, तामस्थ एवं अध्यक्ष

श्री को व गोपिदास
केंद्र निदेशक, तापबिघ-3व4 एवं सदस्य

श्री राजगोपाल मुरली
मुख्य अधीक्षक, तापबिघ 1व2 एवं सदस्य

श्री एम. सूर्य प्रसाद
मुख्य अधीक्षक, तापबिघ 3व4 एवं सदस्य

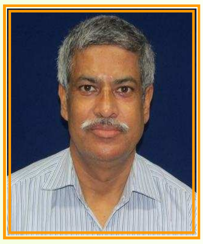

श्री प्रमोद कुमार मिश्रा
मुख्य अभियंता(ई एंड यूएस) एवं सदस्य

श्री मंगेश आर भागवत
अपर महाप्रबंधक(सं एवं सा.प्र.) एवं सदस्य

श्री मनोज कुमार गौतम
अपर महाप्रबंधक (वि एवं ले) एवं सदस्य

श्री अशोक एस. शिंदे
अपर महाप्रबंधक (मा.सं.) एवं सदस्य

श्री के.वी.एस.एन. मूर्ति
अनुरक्षण अधीक्षक, तापबिघ 1व2 एवं सदस्य

श्री प्रशांत ए. जोशी
प्रशिक्षण अधीक्षक एवं सदस्य

डॉ. पारस कुमार जैन
चिकित्सा अधीक्षक एवं सदस्य

श्री चिरंजीब साहा
अनुरक्षण अधीक्षक,
तापबिघ 3व4 एवं सदस्य

डॉ. छवि कुमार गुप्ता
वरिष्ठ प्रशिक्षण अधिकारी,
तापबिघ 1 व 2 एवं सदस्य

श्री जि. देवप्रकाश
उप महाप्रबंधक (मा.सं.)
एवं सदस्य

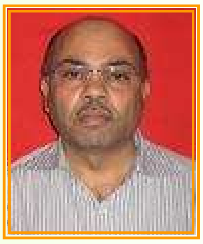

श्री दिनेश कुमार चौहान
वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा)
एवं सदस्य-सचिव

स्थल निदेशक का संदेश

प्रिय पाठको,

तारापुर परमाणु स्थल एनपीसीआईएल के मिशन और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रतिबद्ध है और उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए स्वावलंबी, सुरक्षित एवं किफायती तरीके से देश में न्यूक्लियर विद्युत की उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए संकल्पित है। मुझे गर्व है कि हमारे सभी सहयोगियों ने इस परमाणु ऊर्जा संयंत्र के सफलतापूर्ण परिचालन में पर्याप्त योगदान दिया है। हमारा स्थल एक महत्वपूर्ण स्थल है, जो ऊर्जा क्षेत्र में अग्रणी है। हमें गर्व है कि हम एक ऐसे संगठन का हिस्सा हैं जो विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज के प्रति जिम्मेदारी लेता है। हमारे कर्मचारियों और जनसामान्य की सुरक्षा एवं अच्छा स्वास्थ्य ही मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता है। मैं अपने सभी सहयोगियों से अनुरोध करता हूँ कि हम सुरक्षा, गुणवत्ता और पर्यावरणीय समर्थन में अपने संगठन के मानकों को बनाए रखें।

तारापुर महाराष्ट्र स्थल ने नाभिकीय विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित करने के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में भी यश प्राप्त किया है और तकनीकी क्षेत्र के साथ-साथ राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए भी कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। स्थल को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ठाणे द्वारा उपक्रमों की श्रेणी में राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया है। ये सभी सम्मान व प्रशंसाएं हमारे सभी सहयोगियों के अथक परिश्रम व सकारात्मक प्रयासों के फल हैं। तामस्थ की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के तौर पर मैं यह आशा करता हूं कि भविष्य में भी हमारे सभी सहयोगी अपने सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देंगे। हम राजभाषा संबंधी वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए अपने कार्यालय में राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए प्रयास करते रहते हैं। इस दिशा में पिछले 35 वर्षों से हमारे कार्यालय की हिंदी गृहपत्रिका **'अणुभारती'** महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

इस माध्यम से हम आपको अवगत कराना चाहेंगे कि हमारी राजभाषा गृहपत्रिका का नवीन अंक तैयार है। इसमें हम संगठन की ताजगी, कर्मचारियों के सफलतापूर्ण संघर्ष और संगठन के महत्वपूर्ण घटनाक्रमों के बारे में जानकारी प्रदान करेंगे। सदा की तरह, हम आपके समर्थन और सहयोग के लिए आभारी हैं। हम इस गृहपत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए काम कर रहे हैं और आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए महत्वपूर्ण है। आपके विचार, सुझाव और समर्थन के लिए हम हमेशा आपके आभारी रहेंगे। हमारी टीम के सदस्यों ने प्रतिभाशाली लेखकों के साथ मिलकर इस अंक में आपके लिए कुछ खास तैयार किया है।

मैं **'अणुभारती'** से जुड़े सभी कार्मिकों को धन्यवाद देता हूं तथा समस्त कार्यालयों को राजभाषा कार्यान्वयन के प्रयोजन में सफलता हेतु अपनी शुभकामनाएं देता हूं और गृहपत्रिका की निरंतर प्रगति की कामना करता हूं।

आप सभी का धन्यवाद,

(संजय एम. मुलकलवार)

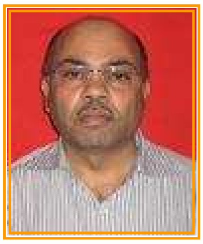

संपादकीय

प्रिय मित्रो,

आपको सादर नमस्कार।

मित्रो, पिछले संपादकीय में नौकरी-पेशा लोगों के लिए धन-बचत योजनाओं के बारे में मोटी-मोटी चर्चा की गई थी। यह विषय बहुत विशाल है, इसके बारे में बहुत कुछ लिखा जा सकता है, किंतु आज हम बात करेंगे ऐसे लोगों के लिए बचत के एक उपाय के बारे में जिन्हें सेवानिवृत्ति के बाद सरकार की ओर से कोई पेंशन मिलने वाली नहीं है। सेवानिवृत्ति के बाद जो भी एकमुश्त धन नियोक्ता की ओर से मिलता है उसे यदि ठीक तरह निवेश करके उपयोग में नहीं लिया गया तो हमारी भविष्य की जरूरतें पूरी करना बहुत मुश्किल हो सकता है। इसलिए हम चर्चा करेंगे एक ऐसी निवेश योजना के बारे में जो खास तौर पर सेवानिवृत्त लोगों के लिए बहुत उपयोगी साबित हो सकती है और इस योजना का नाम है सिस्टमेटिक विदड्रॉअल प्लान (SWP)। सिस्टमेटिक विदड्रॉअल प्लान के तहत निवेशक योजना के अधीन चलने वाले किसी अच्छे म्यूचुअल फंड में एकमुश्त धनराशि निवेश करता है और उसमें से प्रतिमाह कुछ निश्चित धनराशि निकालता रहता है। यह धनराशि उस लाभ राशि में से निकाली जाती है, जो एकमुश्त धनराशि जमा करने पर मिलता है। उदाहरण के लिए यदि मैं 10 वर्ष या इससे अधिक अवधि के लिए 40 लाख रुपए एक ऐसे फंड में निवेश करता हूं जो औसतन सालाना 15-20% का लाभ देता है और इसमें से लगभग 40,000/- रुपए प्रतिमाह निकालता रहता हूं तो भी 10 वर्ष या इससे अधिक अवधि में मेरे खाते में काफी अधिक राशि (लगभग दुगुनी) शेष रहेगी। यह गणना एक मोटी-मोटी गणना है। इससे भी अधिक अच्छा हो कि हम सेवानिवृत्ति के पहले से ही इस प्रकार के किसी फंड में प्रतिमाह सिस्टमेटिक निवेश करते रहें और सेवानिवृत्ति से पहले उसमें से धनराशि बिल्कुल न निकालें, तो ऐसी स्थिति में हमारे खाते में बहुत बड़ी धनराशि एकत्रित हो सकती है, जिसे सेवानिवृत्ति के बाद सिस्टमेटिक विदड्रॉअल प्लान (SWP) में कन्वर्ट किया जा सकता है।

एकमुश्त राशि जमा करते समय हमें बहुत सावधानी बरतने की जरूरत होती है। क्योंकि अच्छा लाभ देने वाले सभी म्युचुअल फंड किसी न किसी प्रकार से स्टॉक मार्केट से जुड़े रहते हैं, इसलिए इनके साथ जोखिम भी उतना ही बड़ा जुड़ा रहता है। मान लीजिए कि जिस समय आपने म्युचुअल फंड में एकमुश्त राशि जमा की उस समय स्टॉक मार्केट बुल रन में था और निवेश के बाद किन्हीं कारणों से मार्केट 10/20/30 प्रतिशत गिर जाता है तो आपके फंड का मूल्य भी लगभग इतने ही प्रतिशत या इससे भी अधिक प्रतिशत में घट जाएगा। ऐसी स्थिति में जो लोग स्टॉक मार्केट को अच्छी तरह नहीं समझते हैं वे घबराकर घाटे में ही अपना पूरा फंड निकाल लेते हैं और इसके बाद ही मार्केट बढ़ना शुरू हो जाता है और धीरे-धीरे 6-8 माह में अपने उसी स्तर तक पहुंच जाता है, जहां से गिरा था, किंतु घाटे में बेचने वाले को तो नुकसान हो गया। यदि कोई ऐसा कारण न हो कि स्टॉक मार्केट एक-आध साल में रिकवर होने की कोई संभावना नहीं दिख रही है, तो गिरावट के समय में और अधिक निवेश किया जाना चाहिए ताकि जब मार्केट रिकवर हो तब आपको लाभ भी अधिक हो। इसलिए जब मार्केट अपने हाई पर चल रहा हो तब या तो गिरने की प्रतीक्षा की जा सकती है या अपने संपूर्ण निवेश को 3 भागों में बांटकर हाई लेवल पर 1 भाग निवेश किया जाए और जब गिरावट हो जाए तब एक-एक करके बचे हुए दोनों भागों का निवेश किया जाए।

निवेश के लिए सही फंड चुनना भी एक बहुत बड़ी कला है और इसे सावधानी से चुनना होता है। मार्केट में बहुत सारे फंड हैं, जिनमें से कुछ ऐसे हैं जिनमें हमारा फंड अधिक सुरक्षित रहता है, अर्थात मार्केट गिरने पर हमारे फंड पर असर कम होता है, किंतु उनमें ग्रोथ भी कम होती है, वहीं कुछ फंड ऐसे होते हैं जो सीधे-सीधे ईक्विटी मार्केट से जुड़े होते हैं, इनमें ग्रोथ/लाभ अधिक होती है, किंतु जोखिम भी अधिक होता है। इनमें भी कई प्रकार होते हैं, जैसेकि लार्ज कैप, मिड कैप, स्मॉल कैप, हाइब्रिड आदि। लार्ज कैप फंड में निवेश अधिक सुरक्षित रहता है किंतु लाभ कम होता है और जैसे-जैसे स्मॉल कैप की ओर बढ़ेंगे लाभ बढ़ेगा किंतु लाभ के साथ-साथ जोखिम भी बढ़ता है, वहीं हाइब्रिड फंड लाभ और जोखिम में संतुलन रखता है। हम जितना जोखिम उठाना चाहेंगे, उतना ही लाभ ले सकेंगे।

फंड के चुनाव में फंड के परफॉर्मेंस पैरामीटर (फंड रेशियो) की भी जांच करनी चाहिए। जैसेकि यह संबंधित इंडेक्स की तुलना में कितना लाभ दे रहा है, डाउन ट्रेंड मार्केट में यह फंड की डाउन साइड को कितना कंट्रोल कर पाता है, डाउन जाने के बाद कितने समय में अपनी हानियों को रिकवर कर पाता है, अपने औसत रिटर्न से कितना प्रतिशत डेविएट होता है, फंड अनुरक्षण प्रभार कितना लेता है, एग्जिट लोड कितना है, आदि। इन सभी पैरामीटरों की जांच करने के लिए www.indmoney.com; www.moneycontrol.com और इसी प्रकार की कुछ अन्य वैबसाइटों तथा गूगल का सहारा लिया जा सकता है। मेरा सुझाव है कि आप किसी से टिप लेकर नहीं, बल्कि स्वयं अध्ययन करके सही फंड का चुनाव करके निवेश करें, ताकि आपको फंड की कमजोरियों और ताकतों का पूरा-पूरा भान रहे, यह ज्ञान ही एक ऐसा आधार होगा जो आपके अंदर फंड के प्रति विश्वास बनाए रखेगा और आप लंबे समय तक फंड में निवेश कर पाएंगे और यह ध्यान रखें कि लंबे समय तक निवेश करने पर ही फंड के अच्छे फायदे दिखाई देंगे।

मित्रो, अणुभारती के इस अंक में आपको विभिन्न तकनीकी एवं गैर-तकनीकी विषयों पर रोचक जानकारी मिलेगी। आशा है पिछले अंकों की तरह यह अंक भी आपको पसंद आएगा।

सादर,

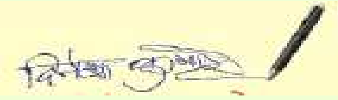

(दिनेश कुमार चौहान)

अपने दिमाग की दक्षता बढ़ाएं

हर व्यक्ति को भगवान ने एक जैसा दिमाग दिया है, लेकिन फिर भी कोई जीवन में सफलता प्राप्त करता है और कोई असफल होकर रह जाता है। इसी प्रकार विद्यालय में भी देखने को मिलता है कि जहां कुछ विद्यार्थी पूरे-पूरे अंक प्राप्तकर परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं, वहीं कुछ अन्य विद्यार्थी उत्तीर्ण होने के लिए आवश्यक गुण लेकर जैसे-तैसे उत्तीर्ण होते हैं, तो कुछ उत्तीर्ण होने में भी असमर्थ रहते हैं। अनुत्तीर्ण विद्यार्थी अपने अनुत्तीर्ण होने का दोष अपने दिमाग को देते हैं कि भगवान ने उनको कम दिमाग दिया है। दरअसल

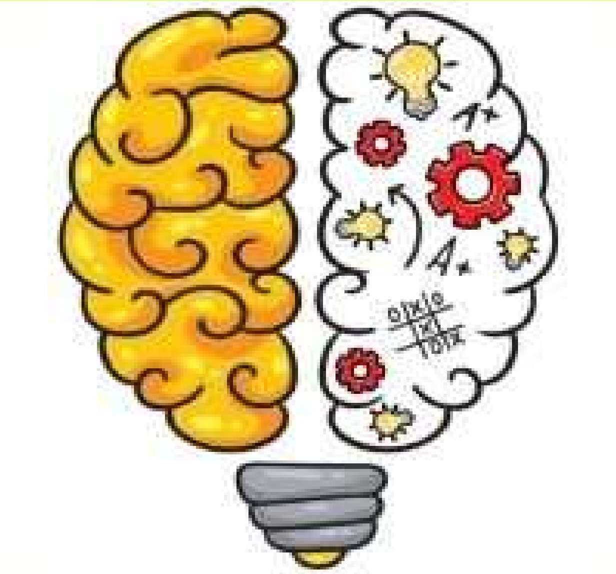

कम या ज्यादा दिमाग वाला तथ्य एकदम तर्कहीन है और दिमाग की क्षमता इस बात पर निर्भर करती है कि आप अपने दिमाग का कितना और किस प्रकार उपयोग करते हैं।

अगर आप किसी कार्य में विशेष परिणाम पाना चाहते हैं, तो आप उस कार्य के प्रति भरपूर रुचि दिखाएं। इससे आपका दिमाग भी उस कार्य के लिए अधिकतम कुशलता दिखाता है, कार्य को पूरा करने के लिए अपने सभी रचनात्मक हिस्सों में मजबूत पकड़ बनाता है और उनको निपुणता से चलाता है। दिमाग का अधिकतम हिस्सा आपके द्वारा शुरू किए गए कार्य को उसके अंजाम तक पहुंचाने के तरीके की रचना करने में जुट जाता है और उसको सफ़लता की ओर ले जाने में आपकी मदद करता है। आप हर रोज जितना कार्य करते हैं, आपका दिमाग उतने ही कार्य के प्रति अपनी प्रतिक्रिया देता है। यदि आप हर रोज दो घंटे पढ़ाई करते हैं, तो उतने समय में पढ़ी चीज़ों पर आपका दिमाग अभिक्रिया करेगा।

यदि आप अपनी कार्य करने की क्षमता को बढ़ाकर दो घंटे की जगह तीन घंटे पढ़ाई करते हैं, तो आपका दिमाग भी बढ़ते हुए हर कार्य के प्रति अपने कमजोर हिस्सों को सक्रिय करके प्रतिक्रिया दिखाता है, जिससे आपकी कार्य करने की दक्षता बढ़ती है। हर व्यक्ति की सफलता का राज उसके दिमाग से जुड़ा होता है कि वह किस प्रकार अपने दिमाग के अधिकतम हिस्सों का उपयोग करते हुए सभी कार्यों को उनके सही अंजाम तक पहुंचाता है।

पहले हमें किसी प्रश्न का उत्तर जानना हो तो हम किताबों का सहारा लेते थे। इन किताबों को पढ़ने से हमारा मस्तिष्क सही तरीके से कार्य कर रहा था। किताबों से प्रश्न का उत्तर खोज निकालने के लिए हमारे मस्तिष्क की अच्छी-खासी कसरत हो जाती थी। गणित के किसी भी प्रश्न को हल करने के लिए घंटों प्रयास करना पड़ता था। गणित का प्रश्न हल करते हुए उसकी विधियों में आने वाले पड़ावों को पार करते समय हर पड़ाव हमारे मस्तिष्क में बैठ जाता था।

आज ज्यादातर सभी के पास स्मार्टफोन और कंप्यूटर हैं। इंटरनेट के माध्यम से किसी भी प्रश्न का उत्तर हमें आसानी से मिल जाता है। गणित का प्रश्न हल करने के लिए हम इंटरनेट की सहायता लेने लगे हैं। इन आसान तरीकों के कारण हमारा मस्तिष्क दुर्बल हो रहा है। किसी भी संशोधन के जिस प्रकार लाभ होते हैं, उसी प्रकार कहीं न कहीं उनके दुष्परिणाम भी

भुगतने पड़ते हैं। आज हम छोटी-से-छोटी वस्तु के लिए भी इंटरनेट पर निर्भर होते हैं। हमारा मस्तिष्क उतना काम नहीं करता, जितना पहले करता था। दिमागी कसरत तो बहुत ही कम हो गई है। मानो हमारे मस्तिष्क में जंग लग गई हो या फिर यह कहा जाए कि हमारे मस्तिष्क में ताला लग गया हो।

हमें हमारे बुजुर्गों से कुछ शिक्षा लेनी चाहिए। हमारे बुजुर्ग किसी भी प्रश्न का उत्तर आज भी किताबों के माध्यम से खोजते हैं। किताबों से उचित उत्तर खोजने की कला उनमें आज भी जीवित है। कई संख्याओं का जोड़ या वियोग करना हो या फिर उनका गुणाकार अथवा भागाकार करना हो तो उसके लिए उन्हें किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं होती। ऐसे प्रश्न तो वे लोग अपने हाथों की उंगलियों का उपयोग कर मौखिक रूप से हल कर देते हैं। उन्होंने किताबों का सहारा लिया था, इसलिए आज भी उनका मस्तिष्क बराबर कार्य कर रहा है। ना तो उनके मस्तिष्क में जंग लगी और ना ही उनके मस्तिष्क में ताला लगा है। आज भी किसी कार्य को करने के लिए हमारे बुजुर्ग हमेशा सक्रिय रहते हैं। हमारा दिमाग कंप्यूटर से भी ज्यादा तेज है, जो हमारी कल्पना से कहीं ज्यादा बातें याद रखता है। लेकिन जीवन में कुछ मुश्किलें ऐसी आती हैं, जिनमें हम असफल हो जाते हैं। इसी कारण हम अपने आपको कमजोर मानने लगते हैं। मनुष्य का दिमाग एक बेहतरीन मशीन है और जो इस पेचीदा मशीन को समझ जाता है, वही मनुष्य अपने जीवन में निरंतर सफल होता है। बचपन से लेकर किशोरावस्था तक बच्चों को माता-पिता, शिक्षक और घर के बड़े-बुजुर्ग अक्सर टोकते हैं। जैसे-तुम्हें कुछ नहीं आता है, तुम कुछ नहीं कर सकते, ज्यादा होशियार मत बनो, आदि। इस तरह किसी को टोकने से उसके दिमाग में नकारात्मकता बैठ जाती है। ऐसे में वह अपने आप को कमजोर मानने लगता है। इसीलिए हमेशा सकारात्मक सोचना चाहिए, ताकि हम अपने आपको कमजोर ना समझें। तभी हम अपने दिमाग का अच्छे से पूरा उपयोग कर सकते हैं। दिमाग को तेज करने के लिए हमें पहेलियां सुलझानी चाहिए, जिससे हमारा दिमाग का ज्यादा उपयोग होगा और मुश्किल से मुश्किल कार्यों को करने में आसानी होगी। जब भी हम कोई कार्य करते हैं, तो उस कार्य में ध्यान लगाना ज्यादा जरूरी है, तभी हम उस कार्य को अच्छे से कर पाएंगे। दिमाग को तेज करने के लिए ज्ञान की भी आवश्यकता होती है और ज्ञान किताबों से मिलता है। एक अच्छी किताब पढ़ने से आप बहुत सारा ज्ञान अर्जित कर सकते हैं।

दिमाग को तेज करने के लिए वर्ग शब्दपहेली सुलझाना भी एक उत्तम उपाय है। नए कौशल सीखने में न केवल आनंद आता है, बल्कि यह दिमाग के संपर्कों को भी मजबूत करता है। दूसरों को कुछ नया सिखाने से भी आपका दिमाग तेज होता है। रोज मेडिटेशन करना, योगासन करना, किताबें पढ़ना और नई भाषा सीखना दिमाग को तेज करने के कुछ सरल उपाय हैं। अपने दिमाग को सही तरीके से नियंत्रित करें, ताकि आप उसका जितना चाहें उतना उपयोग कर सकें। अगर आप अपने कार्य को उत्कृष्ट तरीके से करने की ठान लेते हैं, तो आपके दिमाग का सतर्क हिस्सा, जो आपकी कल्पना के अनुसार आपके जीवन के सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेता है, वह आपकी कल्पना के अनुसार काम करता है और आपको उत्कृष्ट परिणाम पाने में मदद करता है।

जिस प्रकार किसी मशीन को अगर चलाना बंद कर दिया जाए, तो उसकी दक्षता कम हो जाती है, उसी प्रकार अगर हम अपने दिमाग को रचनात्मक गतिविधियों में व्यस्त नहीं रखेंगे तो इसका अधिकतम हिस्सा कुशलतापूर्वक कार्य करना बंद कर देगा। इसीलिए अपने दिमाग को हमेशा ऐसे कार्यों में व्यस्त रखें, जिनमें बुद्धिमत्ता की जरूरत पड़े। जिससे आपके दिमाग का अधिकतम हिस्सा सक्रिय रहेगा और कार्य को कुशलतापूर्वक करना सीख पाएगा।

श्री शिव शंकरदास
फोरमैन/बी, तकनीकी सेवाएं अनुभाग, तापबिघ-1व2

बहू-बेटी, एक समान

कुछ समय पहले की बात है। हमारे पड़ोस में रहने वाले रमेश भाई की शादी कुछ महीने पहले हुई थी। शादी बड़ी धूम-धाम से हुई, सभी बड़े खुश लग रहे थे। शादी के बाद घर में बहू का आगमन बड़ी ही शान से हुआ। सभी कार्यक्रम विधि के अनुसार हुए थे। कुछ दिनों बाद रमेश की मां का अपनी बहू के साथ व्यवहार बदल गया था। वह उसे हर काम करने पर टोकती थी और कहती थी कि काम ठीक से नहीं हुआ है और बार-बार यही कहती कि मायके से यही सीख कर आई है क्या ? कुछ काम ठीक से नहीं कर रही है, ना ही खाना हमारे पसंद का बना रही हो। वैसे तो उनकी बहू सभी काम कर रही थी, मगर उनके मायके के यहां के काम करने का और खाना बनाने का तरीका थोडा-सा अलग था और वह अपने तरीके से ही कर रही थी। रमेश की मां को यह तरीका पसंद नहीं आ रहा था, उसे सभी काम चाहे वह कपड़े धोने हों या बर्तन मांजने हों या खाना बनाना, सभी काम अपने ही तरीके से चाहती थी इसलिए वह उसे बात-बात पर टोकती और डांटती रहती थी, उसे सुकून की जिंदगी जीने नहीं दे रही थी। उसने कई बार रमेश से इस मामले पर चर्चा की, परन्तु रमेश अपनी मां के खिलाफ कुछ नहीं सुनना चाहता था।

एक दिन रमेश की बहन घर पर आई और उसने जब अपनी मां का अपनी बहू के साथ यह व्यवहार देखा, तो उसे बुरा लगा और उसने सोचा कि मां को अपने तरीके से समझाएगी और उनके दिमाग का ताला खोल देगी। उसने अपनी मां को अपने ससुराल आने का न्यौता दिया और कहा कि दो-चार दिन के लिए वह वहां आकर रहे। रमेश की मां कुछ दिनों के लिए अपनी बेटी के ससुराल चली गई। वहां पर उसने यह देखा कि जब भी उसकी बेटी कुछ काम ठीक से नहीं कर पाती, तो उसकी सास उसे उसी तरह टोकती और डांटती थी। रमेश की मां को यह देखकर बुरा लगा और उसने अपनी बेटी से कहा, “तुम अपनी सास की बातें क्यों सुनती हो? कहती क्यों नहीं कि अपने घर में इस तरह ही खाना बनाया जाता है और उन्हें उनकी पसंद का खाना पसंद है तो मैं कुछ दिनों में सीख जाऊंगी। इस तरह टोकना नहीं चाहिए। अच्छे से समझाकर सिखाना चाहिए। हर घर के तौर तरीके अलग-अलग होते हैं। सिखने में समय लगता है।”

तब बेटी ने कहा, “यही बात तुम पर भी तो लागू होती है ना मां। तुम भी तो अपनी बहू को इस तरह से समझा सकती हो। मेरी सास तो बहुत ही अच्छी है मां, वह मुझे अपनी बेटी की तरह ही सब काम सिखाती है और कभी भी किसी काम के लिए टोकती नहीं है। यह नाटक तो हमने रचा है जिससे तुम्हारे दिमाग का ताला खुल जाए और तुम अपने इस व्यवहार को सुधार सको।” रमेश की मां को सब बात समझ में आ गई और उसने अपने व्यवहार को तुरंत बदल दिया और अपनी बहू को अपनी बेटी की तरह समझने लगी।

श्रीमती संगीता ऊके
वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2, मानव संसाधन, तामस्थ

ताले की चाबी

इंसान आज आसमान की बुलंदियों को छू रहा है, इसका पूरा श्रेय उसके दिमाग और प्रगतिशील सोच को जाता है। अन्य जीवों से इंसान अपनी इसी सोच और बुद्धि के बल पर विकसित हुआ है। परंतु अगर इंसान सोचता ही नहीं, तो क्या वह दिमाग के बंद कमरे के रहस्यों को जान पाता? क्या वो अन्य जीवों से इतना अलग होता? शायद नहीं। यह एक प्राचीन काल की कहानी है। तब मनुष्य अन्य प्राणियों के साथ जंगल में रहा करते थे। ना ही यातायात के साधन थे, ना ही कोई उपकरण। मनुष्य कपड़े के नाम पर जानवरों की खाल या पेड़ के पत्ते पहनता था और जानवर को मारकर खाता था। जंगल से लकड़ी काटकर गधे पर लाद कर घर लाना, शिकार कर अपनी भूख मिटाने और प्रजनन इसके अलावा मनुष्य के पास कोई कार्य नहीं था। उस समय यातायात का कोई साधन नहीं हुआ करता था। अतः सामान को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए गधे का इस्तेमाल किया जाता था। मनुष्य गधे को अपने संग जंगल में ले जाता, खुद लकड़ी काटता और गधे पर लादकर शाम को वापिस घर आता। यह मनुष्य की दिनचर्या थी। एक दिन वह अपने गधे पर लकड़ी का बोझ डाले पहाड़ उतर रहा था, पर वो अचानक फिसल कर गिर गया। उसने देखा कि कुछ पत्थर घूमते हुए पहाड़ से नीचे की ओर लुढ़के। मनुष्य जैसे-तैसे अपने घर लौटा। पहली बार उसने सोचा कि अगर पत्थर लुढ़क सकता है, तो लकड़ा क्यों नहीं? अगले दिन मनुष्य लकड़े को पत्थर की तरह गोलाकार काटकर ले गया और उसने उन टुकड़ों को पहाड़ से नीचे की ओर फेंक दिया और देखकर आश्चर्यचकित हुआ कि पत्थर समान लकड़ा भी घूमता हुआ पहाड़ से नीचे की ओर लुढ़क गया। अब उसके दिमाग का ताला खुला। उसने सोचा कि अगर एक लकड़ा लुढ़क सकता है तो वैसा ही दूसरा क्यों नहीं ? अगले दिन वह, लगभग गोल और समान आकार के लकड़े पहाड़ पर ले गया और उन्हें समान तरीके से लुढ़कता देख दंग रह गया।

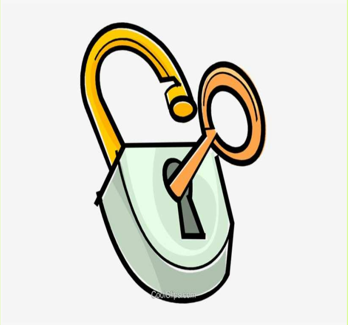

उसने सोचा अगर मैं इन दोनों गोलाकार लकड़ों को जोड़ दूं, तो ये एक साथ लुढ़क सकेंगे। अगले दिन उसने जैसे सोचा था, वैसे ही दो गोलाकार लकड़े के बीच में छेदकर एक डंडा लगा दिया और पहाड़ से लुढ़का दिया और दोनों लकड़े डंडे में घूमते पहाड़ से नीचे पहुंच गए। वह पहाड़ के नीचे उतरा और दोनों गोलाकार लकड़ों को डंडे के बीच पकड़कर जमीन पर खींचने लगा। खींचते-खींचते वह ज्यादा दूर नहीं गया, तब उसे एहसास हुआ कि अगर इस लकड़े की मोटाई कम की जाए, तो शायद काम आसान हो जाएगा। दूसरे दिन उसने काफी मेहनत करके दो गोल चपटे लकड़े बनाए और उनके बीच छेद कर वही डंडा डाल दिया और खींचने लगा। उसे समझ में आ गया कि अब इसके सहारे वह जंगल से लकड़ी काटकर ला सकता है। इस प्रकार मनुष्य ने पहिए का आविष्कार किया और केवल इतना ही नहीं बल्कि उसका यातायात में इस्तेमाल भी शुरू किया। जो मनुष्य पहले पत्थर से शिकार करता था, वह अब भाले से शिकार करने लगा। दो पत्थरों का आपस में टकराव होकर चिंगारी निकलता देख आग का आविष्कार मनुष्य ने किया तथा जो कच्चा मांस वह पहले खाता था अब उसे पकाकर खाने लगा। अन्य जीवों से मनुष्य काफी सुलझ गया। एक-दूसरे को अच्छे से समझने के लिए मनुष्य ने भाषा का आविष्कार किया तथा वार्तालाप से भावनाएं समझ में आने लगीं। वह एक-दूसरे के सुख-दुख को समझने लगा। इसी सोच और दिमाग के बल पर मनुष्य ने अन्य जीवों से हटकर एक अलग पहचान बनाई तथा कई आविष्कार किए और आत्मनिर्भर हो गया।

सीख- हमारा दिमाग एक बंद ताले की तरह है और सकारात्मक सोच है उसकी चाबी, जो प्रगति के दरवाजे खोलने में इंसान की मदद करती है।

डॉ. प्रसाद जोशी

चिकित्सा अधिकारी/डी, तापबिघ अस्पताल

दोहरे अर्थ

कुछ सामान लेना था, इसलिए बाजार गया था। जैसे ही दुकान का दरवाजा खोला, एक वृद्ध दक्षिण भारतीय महिला बड़बड़ाते हुए बाहर निकल रही थी, “पता नहीं, कैसा-कैसा लोग होता है, सामान सामने रखा है, फिर भी नहीं समझता....टाइम वेस्ट करता है...।” दुकान के भीतर घुसते ही उत्तर भारतीय दुकानदार का झुंझलाया और खिसियाया चेहरा देखकर मैं अपनी उत्सुकता को रोक न सका और तुरंत पूछ बैठा, “क्या हुआ भाई?” और दुकान वाला भैया अपनी व्यथा कहने बैठ गया, “सर अंग्रेजी भाषा ठीक है। एक चीज का एक ही नाम होता है। भारत में तो अलग-अलग भाषा के लोग एक ही चीज को दस-दस नामों से बुलाते हैं...क्या-क्या याद रखूं!” इतना सुनते ही मैं पूरा माजरा समझ मुस्कुरा उठा।

सचमुच, भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं, भिन्न-भिन्न रीति-रिवाज हैं। भिन्न-भिन्न संस्कृति है। फिर भी हम सब एक राष्ट्र के नागरिक हैं और यही हमारा सबसे बड़ा गौरव है।

सुबह वाली घटना ने मुझे 15 वर्ष पहले की कुछ घटनाएं याद दिला दीं। मैं मन ही मन हंसने पर मजबूर हो गया। शादी के बाद अहमदाबाद(गुजरात) में रहने आए थे, गुजरात से पहली बार साक्षात्कार हुआ था। गुजरात की भाषा, रीति-रिवाजों से हम अनभिज्ञ थे। उस समय इंटरनेट का भी इतना प्रचलन नहीं था। हमने एक बहुत बड़ा और सुंदर-सा बंगला किराए पर लिया। आस-पास गुजराती लोग ही थे और हमें गुजराती बिल्कुल नहीं आती थी, इसलिए वे बेचारे हमसे अपनी टूटी-फूटी हिंदी और थोड़ी गुजराती मिक्सकर कामचलाऊ बातें कर लेते थे। एक दिन मुझे कहीं जाना था, मैंने पड़ोसी को कहा, “मैं बाहर जा रहा हूं। बच्चे स्कूल से दोपहर को एक बजे आएं, तो आप चाबी दे देना।” पड़ोसन ने बड़ी सहजता से कहा कि आज तो वह भी बाहर जा रही है। उनके काकाजी की 01 बजे ‘जान’ जानी है। मैं सकते में आ गया कि एक बजे ‘जान’ जानी है...क्या मतलब? कोई कैसे जान सकता है कि एक बजे काकाजी की ‘जान’ जाएगी? फिर सोचा कि हो सकता है- काकाजी वेंटीलेटर पर हों और डॉक्टर ने अनुमान लगाया हो। मैंने अपना जाना स्थगित कर दिया। शाम को देखा कि पड़ोसन खूब सजी-धजी वापस आ रही है, तो मन खिन्न हो गया कि चाबी नहीं लेनी थी, तो न लेती, परंतु इतना घटिया बहाना तो ना बनाती। मौत वाले घर में इतना बन-ठन कर जाते हैं क्या? इसी उधेड़बुन में था कि पड़ोसन मैडम मोहनथाल (एक मिठाई) लेकर आ गईं कि मुंह मीठा करो। अब तो मुझसे रहा नहीं गया मैंने पूछा कि आखिर क्या हुआ है? फिर जो खुलासा हुआ तो हम दोनों का हंसते-हंसते बुरा हाल हो गया। दरअसल गुजराती लोग बरात को ‘जान’ कहते हैं और मैं ‘जान’ का मतलब ‘प्राण’ से लगा रहा था।

ऐसे ही एक घटना और याद आ रही है। एक दिन मेरी कामवाली आकर बोली, “साहब, मूं घरे जाऊं छुं। मने आजे ‘ताव’ आवे छे(साहब, मैं घर जा रही हूं। मुझे आज ताव आ रहा है। ‘ताव’ का मतलब तो हम उत्तर भारतीयों के लिए गुस्सा या जोश ही होता है और घर का फैला हुआ काम देखकर मुझे भी ‘ताव’ आ गया और मैं उसको डांटने लगा, “ये ताव तुम कहीं और दिखाना। चलो पहले काम करो” मैंने उसे ताव में आकर और भी ना जाने क्या-क्या कह दिया.. बेचारी रुआंसी हो गई। तब मुझे लगा कि कुछ तो गड़बड़ हुई है। मैंने पड़ोसन से पूछा तो उन्होंने बताया कि गुजराती में ‘ताव’ मायने ‘बुखार’ होता है, फिर तो मुझे बड़ा दुख हुआ कि बेचारी को मैंने नाहक ही इतनी खरी-खोटी सुना दी।

आज भी इन घटनाओं को याद करके मन में यही विचार आते हैं कि भले ही हमारे देश की भाषाओं, संस्कृति, पहनावे में कितनी ही विविधता क्यों न हो, लेकिन यही विविधता तो हमें आपस में जोड़े रखती है !

डॉ.श्याम बिहारी
चिकित्सा अधिकारी/एफ, तापबिघ चिकित्सालय

गहरा ज़ख्म

हमारे जीवन में हमें कई सारे अच्छे और बुरे अनुभवों से गुजरना पड़ता है। समय के साथ कई यादें अक्सर धुंधली हो जाती हैं, लेकिन कुछ बातें हमारे जेहन में इतनी गहराई से बस जाती है कि उनको भूल जाना नामुमकिन सा हो जाता है । ऐसा ही एक वाकया मेरे जीवन में घर कर बैठा है और जब भी मैं उसी प्रकार की कोई घटना देखता या सुनता हूं, तो मेरे दिमाग को झंझोड़कर रख देता है और जीवन की आपा-धापी में दबा हुआ घाव हरा हो जाता है। यह ऐसी घटना है, जो मैं नहीं चाहता कि किसी के भी साथ ऐसा कुछ हो। जब भी मैं उस घटना को याद करता हूं तो मैं बहुत ही हताश और दुखी महसूस करता हूं। यह मेरे कॉलेज के दिनों की घटना है। रोज की तरह उस दिन भी मैं सुबह जल्दी उठकर कॉलेज जाने के लिए तैयार हुआ था। मैं और मेरा चचेरा भाई दोनों एक ही कॉलेज में एक ही कक्षा में पड़ते थे। हम दोनों एकसाथ कॉलेज के लिए निकल पड़े। हमेशा की तरह सबकुछ सामान्य रूप से चल रहा था। हमारी क्लास खत्म होने के बाद हमने कुछ समय दोस्तों के साथ बिताया और फिर अपने-अपने घर वापस लौटे थे। पिछले चार-पांच दिनों से मेरा चचेरा भाई खोया-खोया सा रहने लगा था। आमतौर पर वो उसके दिल की सारी बातें मुझसे शेयर करता था। दरसल ग्यारहवीं साइंस की पढ़ाई में उसे थोड़ी मुश्किलें आ रही थीं। उसका दाखिला भी उसके घरवालों ने उसकी मर्जी के खिलाफ साइंस में करवाया था। इस बात पर घर में अच्छी खासी गरमा-गरमी भी हुई थी। चाचीजी ने किसी तरह समझा-बुझाकर उसे मना लिया था।

मुझे आज भी वह दिन पूरी बारीकी से याद आता है और यह सोचकर अपने आपको कोसता रहता हूं कि मैं उसके मन में क्या चल रहा है यह क्यों नहीं भांप पाया। समय रहते मैं उसको ऐसा खतरनाक फैसला लेने से रोक नहीं सकता था क्या? उस दिन हम दोनों कॉलेज की छुट्टी होने के बाद एकसाथ घर लौटे थे। मेरा चचेरा भाई पिछले चार-पांच दिनों से मायूस और गुमसुम था और पूछने पर तबीयत का कारण बताकर मेरी बात को टाल देता था। उस दिन थकान के कारण मैं कोचिंग क्लास को नहीं गया था।

शाम का समय था और मैं अपने परिवार के साथ बैठकर चाय पी रहा था। तभी अचानक मेरी पड़ोस की चाची ने हमारे दरवाजे पर दस्तक दी, उन्होंने हमें बताया कि मेरे ही कॉलेज के एक लड़के ने आत्महत्या कर ली है। यह खबर सुनकर मैं घबरा गया, मैंने तुरंत गांव के अस्पताल की तरफ दौड़ लगाई, तो वहां पर बड़ी भीड़ उमड पड़ी थी। मेरे चाचा और चाची फूट-फूटकर रो रहे थे। उन्हें देखकर मेरे पैर से मानो जमीन निकल गई और मैं जमीन पर लगभग गिर गया। सामने का मंजर देखकर मैं समझ नहीं पा रहा था कि अब मैं क्या करूं और क्या कहूं। मुझे वो सब दिन और बातें याद आने लगीं जो हम आपस में बोला करते थे।

मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि यह मेरी उसके साथ आखिरी मुलाकत होगी जब मैं उससे दोपहर को मिला था, मैं इस घटना के बाद इतना स्तब्ध था कि मैं ना ही कुछ बोल पा रहा था और ना ही रो पा रहा था। क्यूंकि यह आत्महत्या का मामला था, इसलिए पुलिस केस भी बन गया था। मामले की जांच के लिए पुलिस हमारे कॉलेज के परिसर में आकर हमसे दो-तीन बार पूछताछ भी कर चुकी

थी। पुलिस की पूछताछ में इस बात का पता चला कि वह डिप्रेशन में था। मुझे उसके डिप्रेशन की बीमारी की भनक लगी थी, पर मैंने ऐसा कभी नहीं सोचा था कि वो इस प्रकार अपनी जिंदगी खत्म करने का फैसला लेगा। अब मुझे पछतावे की भावना होने लगी कि मैंने उसके दिल की बात क्यों नहीं समझी। काश मैं समय रहते उस का मन पढ़ पाता और उसका मन परिवर्तन कर पाता। अपने आप पर बहुत गुस्सा आने लगा था। वह अपने दिल की बात हमें कभी बता नहीं पाया। वह बहुत ही सुशील लड़का था। उसकी आत्मा की शांति के लिए कॉलेज में एक दिन की छुट्टी भी रखी गई थी। उन दिनों मैं कई रातों तक चैन से सो नहीं पाया था।

मेरे चचेरे भाई ने अपने जन्मदिन के ठीक एक दिन पहले आत्महत्या कर ली थी। मैं बहुत ही उदास और दुखी था, क्योंकि मैंने केवल चचेरा भाई नहीं बल्कि एक अच्छा और सच्चा दोस्त भी खोया था। अपने आप पर बार-बार गुस्सा आ ही रहा था, साथ ही साथ उस पर भी गुस्सा आता था, क्योंकि मैंने ऐसा कभी नहीं सोचा था कि वह इतना डरपोक होगा कि आत्महत्या जैसे पाप को अंजाम देगा। बाद में मैंने खुद को यह सांत्वना देकर समझाया कि यह नियति का खेल है, इसे कोई बदल नहीं सकता है। हमारे जीवन में जो भी घटनाएं होती हैं वो या तो सुखद होती हैं या दुखद होती हैं। जीवन में यादें हमेशा खास होती हैं, ये यादें हमें कभी सुखद तो कभी दुखद एहसास कराती हैं। ऐसा हो सकता है कि उनमें से कुछ यादें मुस्कान लिए संजोई गई होती हैं तो कुछ हमारी आखों को नम कर जाती हैं।

श्री धर्मराज यादव

तकनीशियन-जी यांत्रिकी अनुरक्षण तापबिघ 3व4

बचत की शुरूआत

यह कहानी मेरे बचपन की है। मैं कक्षा पांचवीं में जिल्हा परिषद विद्यालय में पढ़ता था। हमारे वर्ग शिक्षक श्री सखाराम पिंपळे थे। सुबह 11 बजे प्रार्थना समाप्त होने के बाद हमारी कक्षा शुरू हुई। आज गुरुजी ने बच्चों को पोस्ट ऑफिस द्वारा आरडी में बचत करने की योजना समझाई कि यदि एक विद्यार्थी कम-से-कम 10 रुपए मासिक किश्त पर पोस्ट ऑफिस में आरडी योजना में बचत करता है, तो आज से पांच साल बाद जब वह दसवीं कक्षा में जाएगा, तब उसे 740 रुपए मिलेंगे। गुरुजी के समझाने के बाद सबको लगा कि इस बचत योजना में 10 रुपए मासिक किश्त की शुरूआत करें, लेकिन कक्षा में हम सभी बच्चे सामान्य परिवार से थे। मैं भी सोचता रहा कि घर की इन सामान्य परिस्थितियों में मुझे बचत के नाम पर मासिक 10 रुपए मिलेंगे? 12.30 बजे हमें गांव के विद्यालय में 15 मिनट की छुट्टी मिलती थी, घर विद्यालय से नजदीक था, शुक्रवार होने की वजह से उस दिन मेरी मां अपने काम से छुट्टी पर ही थी। वह अपने सप्ताह भर के कामों में लगी थी, मैं कुछ न बोल पाया। दादी ने मुझे चावल का गरम पानी दिया, उसे पीकर विद्यालय पहुंचा। दो घंटे विद्यालय चालू था, लेकिन मैं इसी बचत योजना के बारे में सोचता रहा। दोपहर के 2.30 बजे हमें मध्याह्न की छुट्टी मिली। गुरुजी ने एक बार फिर सभी को समझाया कि बचत की आदत आगे चलकर बहुत ही फायदेमंद साबित होगी और भविष्य में सभी के जरूरत के वक्त ही काम आएगी। मां अब भी घर के काम में व्यस्त थी, मैंने मां को समझाया कि आज हमारे गुरुजी ने हमें डाक की बचत योजना के बारे में बताया है और यह भी बताया कि जब हम दसवीं कक्षा में जाएंगे, तो हमें 740 रुपए मिलेंगे और तब ये रुपए किताबें और गणवेश के लिए काम आएंगे। उसने कहा, ‘हम गरीब हैं, हर महीने कहां से 10 रुपए जमा करेंगे, तुम अपना नाम इस योजना में मत दो।’ मैंने रो-रोकर मां से कहा, ‘इस महीने तुम किसी से भी मांगकर मुझे 10 रुपए दिलवा दो, अगले महीने से मैं खुद कुछ-न-कुछ काम करके यह जमा करता जाऊंगा।’ मैं रो ही रहा था, थोड़ी देर के बाद न जाने कहां से मां ने किसी से 10 रुपए मांगकर दे दिए। मैंने उन 10 रुपयों को पाने की खुशी में खाना भी नहीं खाया और भाग-भागकर विद्यालय पहुंचा। मैंने वो रुपए गुरुजी को देकर बचत योजना का फॉर्म भरवा दिया। तीन से चार दिनों बाद गुरुजी ने हमें पोस्ट के आरडी एकाउंट का पासबुक लाकर दिया और संभालकर रखने को कहा। मैंने घर आकर सबसे पहले वो पासबुक मां को दिखाई। मैं बहुत खुश था, मां भी बहुत खुश थी। इसके बाद हर महीने मैं अड़ोसी-पड़ोसी के यहां छोटे-मोटे काम करके 10 रुपए का इंतजाम करता था।

श्री अमितकुमार रमेश पाटिल

तकनीशियन/जी, सीएमयू तापबिघ 3व4

खुद को कर बुलंद इतना

राधिका आज सुबह जल्दी उठ गई। वैसे तो वह रोज सुबह छह बजे उठती है, लेकिन ना जाने क्यों आज वह चार बजे ही उठ गई। लाइट चालू होते ही मां ने पूछा, "इतनी जल्दी क्यों उठ गई हो, जरा घड़ी तो देखो...कितने बजे हैं? तुम्हारी परीक्षा तो अभी खत्म हो गई है, फिर क्यों इतनी सुबह उठी हो, थोड़ा आराम करो।" मां बोले ही जा रही थी, लेकिन राधिका चुपचाप अपना काम करने में व्यस्त थी। राधिका बहुत समझदार लड़की थी। अभी-अभी उसने 12 वीं कक्षा की परीक्षा दी थी। उसे दसवीं में भी 92% अंक मिले थे, पर कई दिनों से वह थोड़ा सा परेशान दिख रही थी। वह अपनी ही दुनिया में खोई हुई थी। मां ने उसे कई बार टोका पर उसने कोई जवाब नहीं दिया।

राधिका अपने जूते और पानी की बोतल साथ में लेकर जा रही थी, तभी मां ने उसे पूछा कि इतनी सुबह-सुबह वह इस तरह कहां जा रही है? राधिका ने शांति से मां की तरफ देखा और बोली, "मैं मार्शल आर्ट के लिए जा रही हूं।" मां ने पूछा कि मार्शल आर्ट जाने की क्या जरूरत आ पड़ी है? राधिका ने मां को शांति से कहा, "क्या तुम्हें मंदिरा याद है...? हम स्कूल में एक साथ दसवीं कक्षा तक पढ़ते थे। आगे की पढ़ाई के लिए वह दिल्ली चली गई। दिल्ली में छात्रावास में रहकर पढ़ाई कर रही थी। मां, मंदिरा के साथ वहां दिल्ली में कुछ ऐसा हुआ है, जिसने मुझे झकझोरकर रख दिया है।" राधिका ने बताया कि मंदिरा जिस महाविद्यालय में है, वहां से छात्रावास दूर है, बहुत दूर है। इसलिए उसे कभी भूमिगत रेलवे से या फिर टैक्सी से आना जाना पड़ता है। कुछ दिन पहले कॉलेज की लाइब्रेरी में पढ़ाई के लिए अधिक समय तक रुकने की वजह से उसे देर हो गई। अब उसे घर जाने के लिए टैक्सी करनी पड़ी और ट्रैफिक की वजह से और ज्यादा देर हो रही थी। ऐसे में अचानक टैक्सी में कुछ खराबी आ गई और वह स्टार्ट नहीं हो रही थी। टैक्सी ड्राइवर ने बीच में ही गाड़ी खड़ी कर दी। वह गाड़ी से नीचे उतरा और गाड़ी को क्या हुआ है, यह देखने की कोशिश करने लगा। बहुत देर हो चुकी थी, लेकिन गाड़ी वाले को कुछ पता नहीं चल रहा था। थोड़ी देर बाद राधिका घबराने लगी। वह गाड़ी से नीचे उतरी और वाहन चालक से पूछने लगी कि आखिर माजरा क्या है। उसने बताया कि टैक्सी खराब हो गई है और इसे ठीक होने में थोड़ा वक्त लगेगा। यह सुनकर राधिका गाड़ी में जाकर बैठ गई। बहुत देर होने के बाद भी टैक्सी ठीक नहीं हो पा रही थी। अब मंदिरा को डर लगने लगा था। ऊपर से मोबाइल का नेटवर्क भी नहीं था, जिससे वह और डर गई थी। अब मंदिरा ने तय कर लिया कि अब वह टैक्सी में नहीं रूकेगी और टैक्सी से उतरकर वह चलने लगी। तभी टैक्सी का चालक उसके सामने आकर रुका और बोला, "मैडम, आप टैक्सी में रहिए....ऐसा सुनसान रास्ता अकेली लड़की के लिए ठीक नहीं है। घबराओ मत, मेरी भी आपके जैसी एक बेटी है। आपको सही सलामत आपके हॉस्टल तक पहुंचाना मेरी जिम्मेदारी है।"

लेकिन मंदिरा का मन नहीं मान रहा था। परंतु अंधेरा और सुनसान सड़क को देखकर वह उधर ही रुक गई। वहीं दूर एक दीवार के पास कुछ लड़के खड़े थे। वे बहुत देर से मंदिरा और ड्राइवर के बीच में जो बातें हो रही थीं, सुन रहे थे। थोड़ी ही देर में वहां से दो लड़के मंदिरा के सामने आकर खड़े हो गए और बहुत ही धीमी आवाज से कहा, "घबराइए मत बहन जी, हम आपकी मदद कर सकते हैं?" मंदिरा ने उनकी तरफ देखा भी नहीं, उल्टा उन लड़कों को देखकर वह और घबरा गई थी। लेकिन उन लड़कों के अदब और प्रेम से बोलने का तरीका काफी नर्ममिजाज था इसलिए उसने बहुत हिम्मत जुटाकर उनसे कहा कि उनकी मदद नहीं चाहिए। फिर उन लड़कों ने कहा, "बहन शायद आप हमारे बारे में कुछ गलत सोच रही हो। आपको अगर चलकर जाना है, तो हम आपसे 2 मीटर की दूरी बनाकर चलेंगे, ताकि हम आपपर सुरक्षित नजर रख सकेंगे और जैसे ही आप अपने छात्रावास में पहुंच जाएंगी, हम वहां से लौट जाएंगे। यदि आप यहीं रुकना पसंद कर रही हैं, तो हम भी आपकी सुरक्षा के लिए यहां पर रुकेंगे। और अगर आप कहें, तो हम अगले मोड़ पर जाकर आपके लिए दूसरी टैक्सी का इंतजाम भी कर सकते हैं। जैसा आपको ठीक लगे, आप हमें बताइए।" मंदिरा टैक्सी में शांत बैठी रही। बस थोड़ी ही देर में गाड़ी चालू होने की आवाज सुनाई दी। टैक्सी चालक मंदिरा के पास आकर बोलने लगा, "मैडम, गाड़ी चालू हो गई है। अब हम जल्द ही आपके छात्रावास तक पहुंच जाएंगे।" यह

देखकर बाकी सब लड़के उनका धन्यवाद करके अपनी जगह पर जाकर खड़े हो गए। जैसे ही गाड़ी चालू हुई मंदिरा की जान में जान आ गई। थोड़ी ही देर में उनकी टैक्सी छात्रावास के नजदीक पहुंच गई। टैक्सी से उतरते ही उसने गाड़ी के पैसे दे दिए। टैक्सी वाला बोला, "मैडम जी, माना कि दुनिया बहुत डरावनी है, लेकिन हम भगवान को मानते हैं...तो हमें हर इंसान में भगवान दिखाई देना चाहिए।" फिर टैक्सी चालक धन्यवाद देकर वहां से टैक्सी लेकर निकल गया। जैसे ही मंदिरा छात्रावास के गेट तक पहुंची गेट का वॉचमैन उसके नजदीक आकर उससे खैरियत पूछने लगा। यह देखकर मंदिरा आश्चर्यचकित हो गई। वॉचमैन ज्यादातर किसी लड़की से कभी बात नहीं करता था, लेकिन आज वह फिक्र के मारे मंदिरा से बात करने के लिए तैयार हो गया था। उसने पूछा, "आपको इतना देर क्यों हो गया मैडम? आपको पता है ना छात्रावास में आने का टाइम क्या है? क्या हुआ, कुछ बात हो गई क्या बाहर।" मंदिरा ने उसे बताया कि आज लाइब्रेरी में देर हो गई। यह कहकर मंदिरा भागी-भागी अपने रूम में पहुंच गई। जैसे ही रूम में मंदिरा पहुंची उसे हल्का महसूस होने लगा। और फिर न जाने क्यों बहुत जोर-जोर से रोने लगी। आईने में देखकर उसे और ज्यादा रोना आ रहा था। सबसे पहले उसने राधिका को कॉल किया और जो कुछ भी हुआ वह सब बता दिया।

मंदिरा ने राधिका से कहा, "मुझे उस लड़के में और उस टैक्सी चालक में और उस वॉचमैन में एक ही बात नजर आई और वह थी स्त्री के प्रति आदर, स्त्री के प्रति सत्कार, स्त्री के प्रति सम्मान। अगर दुनिया में ऐसे ही लोग हर तरफ हो जाएं, तो इस दुनिया में किसी भी स्त्री का जीवन कितना सादा-सीधा और आसान हो जाए।" मां ने यह सब सुनकर उन सभी लोगों को दुआएं दीं और भरपूर आशीर्वाद देते हुए कहा, "अगर यही सोच सब लोगों की हो जाए तो सच में दुनिया की सभी लड़कियों के मां-बाप की दुआएं उन्हें हमेशा लगेंगी और हमेशा कुशल मंगल ही होगा। भला हो उन सबका, जिन्होंने उस मंदिरा की मदद की। सच में ऐसे भले लोग भी इस समाज में रहते हैं, इस पर मेरा विश्वास ही नहीं हो रहा है। नहीं तो पल भर में सब तहस-नहस हो जाता है बेटा। इस समाज में औरतों की तरफ देखने का नजरिया हमेशा लोगों का अलग ही रहा है। औरतों को हमेशा ही हर तरफ से बंधनों में बांधने की कोशिश होती रही है। हर जगह औरतों को खिलौने की नजर से या हवस से भरी नजरों से देखा जाता है। भगवान का लाख-लाख शुक्र है कि मंदिरा को उस रात अच्छे लोग मिले, नहीं तो ना जाने क्या होता बिचारी का....?" इस पर राधिका ने कहा, "मां, मान लो हमें ऐसे नेक विचारों वाले लोग मिल भी गए, लेकिन फिर भी खुद की सुरक्षा करने में अगर स्त्री सक्षम हो जाए तो क्या गलत है? अपनी सुरक्षा अपने ही हाथ में हो तो कितना आसान हो जाए। हमें हमेशा दूसरों पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा। हम भी निडर होकर आत्मसम्मान के साथ अपने सपनों को उड़ान दे सकते हैं। हम आत्मनिर्भर हो सकते हैं। औरत के चारों ओर मर्दों ने जो जंजीरें बांधने के लिए पहनाई है, वो अगर उनकी सुरक्षा के लिए हो तो दुनिया कितनी अलग होगी। यह संसार कितना खुशहाल होगा।" मां को समझाने का राधिका दिल से प्रयास कर रही थी। मां ने कहा, "उसका समझ आ गया लेकिन तुम्हारा क्या..? यह क्या बचपना चालू किया है तुमने?" राधिका बोली, "खुद को अगर कुछ बड़ा करना है, खुद को अपनी नजर में सम्मान देना है, अगर खुद को आसमान की परी कहलाना है, तो हम ऐसे डर-डर के जी नहीं सकते और अगर जी ही नहीं पाए, तो खुद को बुलंद कैसे करेंगे मां? इस दुनिया ने मुझे मान-सम्मान मेरी प्रतिष्ठा को वजूद दिया, तो बहुत अच्छा है लेकिन ना जाने अगर ऐसा ना हो पाया तो....सोचो मां कब क्या होगा? ऐसे में दूसरों से उम्मीद लगाना ठीक रहेगा या खुद को ऐसे समय के लिए तैयार करना ठीक रहेगा कि मैं अपनी आत्मरक्षा कर सकूं। बोलो मां...बोलो ना....। तभी तो मुक्त हो पाऊंगी इन जंजीरों से मैं।" मां ने झट से राधिका को गले लगाया और उसकी पीठ थपथपाई और शाबाशी दी और भागते-भागते किचन में जाकर एक गिलास संतरे का जूस लेकर आई और बोली, "यह लो तुम्हारा एनर्जी ड्रिंक।"

मां और राधिका दोनों जोर-जोर से हंसने लगे। मां ने कहा.......**जा..जी ले अपनी जिंदगी...अपनी शर्त पर....... मुस्कुरा ले, हंस ले.........बिना किसी से डरे, आजादी से.......हम सब तुम्हारे साथ हैं।**

श्री महेश गोपाल महांगडे,
तकनीशियन/जी तापबिघ 3व4

सादगी की प्रतिमूर्ति-लाल बहादुर शास्त्री

सादा जीवन – उच्च विचार का नारा तो बहुतों ने दिया, परंतु यदि किसी के जीवन में प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहते हैं तो वे महान आत्मा थे लाल बहादुर शास्त्री जी। प्रधानमंत्री जैसे सर्वोच्च पद पर पहुंचने के बाद भी उनकी सादगी वैसे ही रही जैसे बचपन में थी। उन्होंने जो कहा उसे सर्वप्रथम स्वयं अपने जीवन में लागू भी किया। प्रधानमंत्री बनने के पश्चात देश-विदेश के लोग यही समझते थे कि यह नन्हा-सा आदमी भला कैसे इतने विशाल देश को संभाल सकेगा, परंतु उन्होंने पाकिस्तान द्वारा किए गए हमले का ऐसा जोरदार जवाब दिया कि अय्यूब खान घबरा गया। शास्त्री जी के बुलंद इरादे देख उसकी आंखें खुल गईं। जिसे उन्होंने एक कोमल, सरल और मृदुभाषी व्यक्ति समझा था उसे क्या पता था कि उसके पीछे एक लौह पुरुष छिपा हुआ था। एक बुरी तरह हारा हुआ घुसपैठिया दुश्मन और कर भी क्या सकता था। अपनी ही लगाई हुई आग में उसके हाथ बुरी तरह झुलस चुके थे।

ऐसी सादगी की प्रतिमूर्ति शास्त्री जी का जन्म बनारस के पास रामनगर नामक कस्बे में 2 अक्टूबर सन 1904 को हुआ था। उनके पिता शारदा प्रसाद जी इलाहाबाद की पाठशाला में अध्यापक थे। शारदा प्रसाद व उनकी पत्नी रामदुलारी दोनों ही आस्थावान प्रकृति के थे। माता-पिता के उच्च संस्कारों की छाया उनके संपूर्ण जीवन में प्रतिबिंबित होती रही। बचपन में ही पिताजी का स्वर्गवास होने के कारण उनकी मां के सभी चारित्रिक गुण उनमें समा गए थे। शास्त्री जी की परवरिश उनके ननिहाल में नाना हजारीलाल के संरक्षण में हुई, जो एक स्कूल अध्यापक और सुसंस्कृत व्यक्तित्व के धनी थे। शास्त्री जी का बचपन अत्यधिक गरीबी में गुजरा। वे हॉकी व फुटबॉल जैसे खेल खेलना चाहते थे, परंतु जब घर में खाने के लिए पैसे नहीं थे तो खेल का सामान खरीदने के पैसे कहां से आते। पर उनकी कुशाग्र और प्रतिभाशाली बुद्धि ने इसका हल निकाल लिया। वह खजूर के फूल जमा करते और उन्हें रद्दी व फटे-पुराने कपड़े में लपेटकर गेंद की शक्ल बना लेते और कुछ मजबूत पेड़ की शाखाएं तोड़कर उन्हें हॉकी स्टिक बना लेते। लाल बहादुर ने परिस्थितियों से भरसक संघर्ष करके उन्हें अपने अनुकूल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। वे जानते थे कि कर्म का मार्ग फूलों की सेज नहीं होता। बड़े-बड़े कर्म योगी को कष्ट सहन करने पड़ते हैं।

उन्होंने कभी अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आसान मार्ग नहीं चुना। छोटे कद एवं कमजोर शरीर के बावजूद उनमें बला की हिम्मत थी। इतिहास इस बात का गवाह है कि आसान कामों को करने वाले कभी कोई महान कार्य नहीं कर सके हैं। लाल बहादुर जी जिस मिट्टी के बने थे, उसे संघर्ष के जल से सींचा गया था। प्रेम देना और प्रेम पाना उन्होंने अपनी ननिहाल से सीखा था। किसी दुखी को देखकर द्रवित होने का गुण उन्हें अपनी मां से मिला था। शिक्षा का महत्व क्या होता है, यह बात उन्हें अपने पिता के रक्त से मिली थी। शास्त्री जी को जब भी जैसी भी परिस्थिति मिली उन्होंने स्वयं को उस हाल में ढाल लिया। तकलीफें सहीं, परंतु स्वयं को उसमें घुलाया नहीं वरन उनसे स्वयं को संवारा।

'संतोष के दुर्ग को कोई भेद नहीं सकता' इस सत्य का पूरा लाभ उनको मिला। थोड़े में संतोष कर लेने

वाले उस व्यक्ति के सामने आने वाली हर समस्या को निराशा ही हाथ लगती। परेशानियां उनकी हमकदम तो थीं, फिर भी उन्होंने अपनी स्मृतियों में कहा है -- "कुल मिलाकर उनका स्कूली जीवन हंसी खुशी ही बीता।" वाणी की मधुरता और मित्रतापूर्ण व्यवहार उनके चरित्र की दो बड़ी विशेषताएं थीं।

उन्होंने मित्रता की भावना से बढ़े हुए हाथ को कभी नहीं ठुकराया और ना ही मित्रता के लिए अपना हाथ बढ़ाने में कोई संकोच किया। अपने प्रत्येक कर्म को उन्होंने किसी कुशल शिल्पी की भांति सधे हुए हाथों से संपन्न किया। जीवन में सबसे आगे निकलने वाला व्यक्ति वही होता है, जो कर्म के प्रति सतर्क और साहसी हो। ये दोनों गुण उनमें प्रचुर मात्रा में थे। परिवार की माली हालत ऐसी न थी कि वे देश सेवा को समर्पित हो सकें। परंतु देश की सेवा उन्हें घर की परिस्थिति से ज्यादा मूल्यवान लगती थी। अपने कर्म को पूजा का दर्जा देने वाले गांधी जी के प्रति उनका स्वाभाविक रुझान था, जिनकी एक झलक पाने के लिए कोई भी कीमत चुका सकते थे।

पहली बार जब उन्होंने गांधी जी का भाषण सुना तो वह अभिभूत हो गए। लाल बहादुर अपनी मां की स्वीकृति लेना आवश्यक समझते थे। मां ने उनके देश सेवा के प्रति समर्पण के भाव को सुनकर कहा- -'बेटा मुझे तुझ पर विश्वास है। मैं यह भलीभांति जानती हूं कि तुमने जो भी फैसला किया होगा, जल्दबाजी में नहीं बल्कि बहुत सोच-समझकर ही किया होगा।' मां के इस उत्तर ने लाल बहादुर के दिल का बोझ उतार दिया।

मां की स्वीकृति मिलते ही वे पूर्ण उत्साह के साथ छात्र आंदोलन में कूद पड़े, जिसका परिणाम यह हुआ कि सन 1921 में उन्हें प्रथम बार जेल जाना पड़ा। लेकिन उन्हें अपने गिरफ्तार होने का रंज मात्र भी अफसोस नहीं हुआ। इस गिरफ्तारी के कुछ ही घंटे बाद उन्हें चेतावनी देकर छोड़ दिया गया। कठिनाइयों को जीवन की परीक्षा समझने वाले लाल बहादुर सब कुछ मुस्कुराकर झेलते थे। उनकी सोच निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त की जा सकती है --

मुश्किलें इंसान का हौसला आजमाती हैं
स्वप्न का पर्दा निगाहों से हटाती हैं
गिर गया, गिरकर संभल ऐ आदमी
ठोकरें इंसान को चलना सिखाती हैं !

जिंदगी की सच्चाई यही है कि गिरना और गिरकर संभालना ही सीखने की पहली शर्त है। लाल बहादुर से कुछ अलग हटकर सोचते थे। इसलिए भीड़ से कुछ अलग हटकर अपनी स्वयं की पहचान बना सके। उनकी पत्नी ललिता देवी भी किसी जोगनी से कम नहीं थी। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण तब देखने को मिला जब लाल बहादुर केंद्र के मंत्री बनाए गए, तो ललिता जी के वस्त्रों की संख्या दो से कुछ आगे बड़ी। वह भी तब जब उनकी बेटियों ने उन्हें साड़ियां पहनने की जिम्मेदारी संभाल लीं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शास्त्री जी को पुलिस और यातायात मंत्री के रूप में पदभार संभालने की जिम्मेदारी का मौका मिला, जिसमें उन्होंने उत्तर प्रदेश के सड़क यातायात का राष्ट्रीयकरण कर दिया। इसके पश्चात अन्य राज्यों का राष्ट्रीयकरण हुआ। पंडित जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री जी की प्रतिभा को अच्छी तरह पहचान चुके थे।

27 मई 1964 को पंडित जवाहरलाल नेहरू के देहावसान के पश्चात हर दिल यही प्रश्न पूछने लगा कि पंडित नेहरू जी के बाद कौन संभालेगा देश की बागडोर? कौन संवारेगा भारत का भविष्य? निश्चित ही लालबहादुर शास्त्री कर्तव्यनिष्ठ जिम्मेदार व्यक्तित्व को भावी प्रधानमंत्री के रूप में पहले ही स्वाधीन देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु जी ने चुन लिया था।

परंतु हमारे प्रिय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी ज्यादा दिनों तक जिंदा नहीं रह सके। दिनांक 10 जनवरी, 1966 की रात्रि को अचानक दिल का दौरा पड़ा और 11 जनवरी को सुबह होते-होते परम तत्व में विलीन हो गए।

श्री शरीफ खान,
वैज्ञानिक सहायक-ई, प्रचालन, आर आर साइट

नई राह

अन्य रविवार की तुलना में आज का रविवार खास है, क्योंकि आज 'सी.बी.एस.ई.' के बारहवीं का नतीजा आने वाला है और 'श्रीमान अजय गुप्ता' और उनकी पत्नी 'श्रीमती कमलादेवी' सुबह से अपने इकलौते लड़के 'सिद्धार्थ' के रिजल्ट की चिंता में हैं। अब हम चलते हैं -- अपनी कहानी के नायक 'सिद्धार्थ' उर्फ 'सिड' के कमरे में। सारी दुनिया की चिंता से परे, सिड अपने कमरे में सो रहा है। सुबह के 10.00 बज चुके हैं, पर यह प्राणी समस्त चिंताओं से मुक्त है। उसे क्या करना है, क्या नहीं करना है, यह अक्सर उसकी बुआ और चाचा तय करते हैं। सिड के चाचा का लड़का न्यूयॉर्क में इंजीनियर है और बुआ की लड़की स्कॉटलैंड में आई.टी. कंपनी में प्रोजेक्ट मैनेजर है। अक्सर सिड के जीवन में उथल-पुथल मचाने में उसकी बुआ और चाचा का ही योगदान रहता है।

सिड के पापा उसके कमरे में आते हैं। उसे उठाकर कहते हैं, "दुनिया ने अपना आधा काम निपटा लिया और जनाब खर्राटे मारकर सो रहे हैं। पता है, आज तुम्हारा रिजल्ट आने वाला है, चलो उठो।" सिड उठते हुए बोलता है, "क्या पापा, चैन से सोने भी नहीं देते। जल्दी उठकर भी मैं क्या कर लूंगा। रिजल्ट तो वही आएगा, जो आना होगा।" सिड के पापा बोलते हैं, "बकवास बंद कर और जल्दी से तैयार हो जा।" तभी दरवाजे की घंटी बजती है। सिड के चाचा और बुआ उसके घर आते हैं। सिड के चाचा उसके पापा से बोलते हैं, "भाईसाहब, बारहवीं का रिजल्ट आ गया है। सिड का रिजल्ट आ गया है। सिड का रिजल्ट तो देखो।" उसके पापा जैसे ही सिड का रिजल्ट देखते हैं, सिर पकड़कर बैठ जाते हैं। सिड बाथरूम से आता है और पूछता है कि इतना सन्नाटा क्यों है ? इसपर बुआ बोलती है, "नालायक ! तुझे शर्म आनी चाहिए, बारहवीं में तेरे 54 प्रतिशत मार्क्स आए हैं।" सिड कहता है, "अरे वाह, फिर इतनी उदासी क्यों ? मैं तो पास हो गया। यह समय तो उत्सव मनाने का है।" चाचा कहते हैं, "जनाब, यह समय उत्सव मनाने का नहीं आपके जूते खाने का है।" बुआ कहती है कि सिड के बस की नही, इंजीनियरिंग एंट्रेंस एग्जाम निकालना। सिड बोलता है, "कोई नहीं बुआ। मैं बी.ए. कर लूंगा।" चाचा कहते हैं, "बी.ए. करके तू कौन-सा कीर्तिमान बना लेगा। मेरी मानो भाईसाहब, किसी अच्छे इंजीनियरिंग कॉलेज में मैनेजमेंट कोटे से इसका एडमिशन करा दो।"

गुप्ता जी ने हमेशा की तरह वही किया, जो उनके भाई-बहन ने कहा। सिड की एक न सुनी। इंजीनियरिंग सिड के बस की बात नहीं थी, परिणामस्वरूप पहले ही साल में वो सभी विषय में फेल हो गया। इस मौके पर भी जले पर नमक छिड़कने उसके बुआ और चाचा उसके घर आ धमके। चाचा ने सिड को डांटते हुए कहा, "तुझे शर्म आनी चाहिए। तुम्हारे भाई-बहन की सभी मिसाल देते हैं और तुमने हमारी नाक कटवा दी।" सिड ने कहा, "मुझे समझ में नहीं आती इंजीनियरिंग, तो क्या करूं? मैंने पहले ही कहा था आर्ट्स पढ़ने दो। आप अपनी ही चलाते रहे।" इस पर बुआजी बोली, "देखो तो कैसे जबान चला रहा है।"

सिड गुस्से में घर से बाहर निकल जाता है और एक कॉफी-शॉप में जाता है। वहां वेटर की ड्रेस में मानसी को देखता है, जो कि उसकी क्लासमेट थी। सिड कहता है, "मानसी, तुम यहां कैसे?" मानसी कहती है, "घर के आर्थिक हालात ठीक नहीं है। अपना खर्चा निकलने के लिए यहां पार्ट टाइम जॉब करती हूं। तुम क्या कर रहे हो?" सिड अपनी पूरी व्यथा मानसी को सुनाता है और कहता है, "समझ नहीं आता क्या करूं? मैं सबसे बड़ा लूजर हूं।" मानसी कहती है, "सिड तुम लूजर इसलिए हो, क्योंकि तुम्हारी लाइफ का फैसला तुम्हारे रिश्तेदार करते हैं। जिन्होंने सिर्फ तुम्हारी कमी देखी है। जरूरी नहीं कि हर आदमी इंजीनियर, डॉक्टर बनकर ही सफल हो। दुनिया में लोग अपनी योग्यता के अनुसार काम करते हैं। तुम वो काम करो, जिसमें तुम्हारा दिल लगे। पहले तुम अपनी नकारात्मकता को दूर करो और अपनी क्षमता का

मूल्यांकन करो। तुम में भी कुछ खास है। तुमको याद है, कॉलेज फंक्शन के प्रेजेंटेशन का काम सर तुमको देते थे। कॉलेज ड्रामा में तुमको हमेशा प्राइज मिलता था और जब कॉलेज ट्रिप पर हम सभी उदयपुर गए थे, तब तुमने सबको कितना बढ़िया गाइड किया था। लड़कियां तुम पर फिदा हो गई थी। घर जाओ, शांत मन से सोचो और फिर मुझे कल फोन करना। मेरा नम्बर नोट कर लो।"

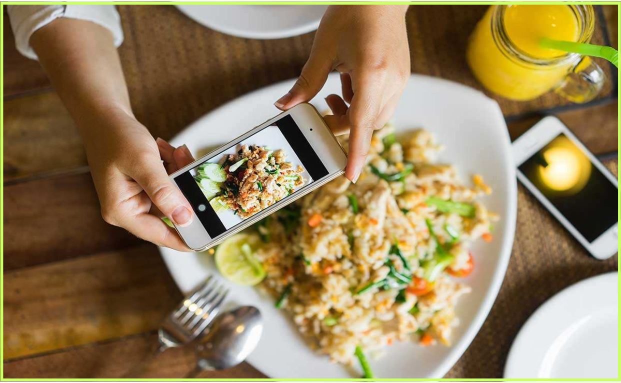

सिड को नई-नई जगह घूमना, लोगों से मिलना, बात करना अच्छा लगता था। सारी रात सिड ने सोचा और सुबह होते ही मानसी को फोन लगाया और कहा, "मैंने सोच लिया है, मैं 'ट्रैवल ब्लॉगर' बनूंगा।" मानसी ने कहा कि वही करो जो दिल कहे। शाम को सिड के चाचा और बुआ घर पर आए। सिड ने चाचा और बुआ के सामने अपनी बात रखी। चाचा जी ने कहा, "विनाश काल विपरीत बुद्धि।" सिड ने कहा "आप लोगों की बात मानकर देख लिया। इस बार कुछ अपना भी कर लूं। पापा आप क्या कहते हो? बचपन से ही इनकी सुनते आ रहे हो, एक बार मेरी भी सुन लो।" इस बार गुप्ता जी सिड का साथ देते हैं। इस पर बुआ जी बोलती है, "भाई साहब आप पछताओगे।"

सिड ने ट्रेवल-ब्लॉग का काम चालू कर दिया, वो लालकिले पर ब्लॉग बनाता है, जिसे सिर्फ 12 लोगों ने ही देखा। निराश होकर वो मानसी से कहता है कि सिर्फ 12 लोगों ने ही सब्सक्राइब किया। मानसी कहती है कि यह शुरूआत है, लेकिन जिन्होंने भी तुम्हारे ब्लॉग को देखा, सभी ने तारीफ के पुल बांध दिए। अगला वीडियो वो एक गरीब छोले-भठूरे वाले का बनाता है और यह वीडियो रातों-रात इतना वायरल होता है कि गरीब छोले-भठुरे वाले की दुकान पर भीड़ लग जाती है।

सिड मानसी से कहता है, "मानसी मेरे इस वीडियो ने तो उस गरीब की काया-पलट दी, इसी खुशी में शाम को तुम्हारी पार्टी।" मानसी कहती है, "पार्टी मैं उस दिन लूंगी जब तुम अपने पैसों से दोगे।" अब सिड जहां भी जाता, ट्रेवल ब्लॉग के साथ वहां के फूडब्लॉग भी बनाता, वो सफलता की ओर बढ़ रहा था, पर उसकी दोस्त मानसी न जाने कहां चली गई। अब कई रेस्टोरेंट

मालिक उसको अपने रेस्टोरेंट का प्रोमोशन करने के लिए पेमेंट भी देते। धीरे-धीरे सिड देश का नंबर एक ट्रेवल और फूड ब्लॉगर बन गया। चंडीगढ़ के एक रेस्टोरेंट-मालिक ने उसे अपने रेस्टोरेंट के प्रोमोशन के लिए बुलाया, सिड वहां अपनी टीम के साथ पहुंचा। वहां उसने मानसी को देखा और उससे पूछा, "तुम यहां क्या कर रही हो? और कहां गायब हो गयी थी?" मानसी ने बताया कि उसके पापा अचानक चल बसे, इसलिए घर वापस जाना पड़ा। यहां पर वह अपनी कंपनी के प्रोजेक्ट मीटिंग के लिए आई थी। मानसी ने खुशी जताई कि सिड अब एक बहुत बड़ा ब्लॉगर बन गया है। इस पर सिड ने कहा, "यह तो तुम्हारा कमाल है, जो तुमने मुझे नई राह दिखाई। मैंने सकारात्मकता की चाबी से नकारात्मकता के ताले को खोलकर अपनी योग्यतानुसार दिमाग का सही प्रयोग कर जीवन में सफलता पाई। मेरे बुआ-चाचा जो मुझे अक्सर अपने बच्चों की मिसाल देते थे आज मैं उनके बच्चों से भी ज्यादा कमाता हूं। मानसी याद है तुमको, तुमने मुझसे कहा था कि जिस दिन तुम कमाने लगोगे, उस दिन तुम मुझसे पार्टी लोगी।" मानसी ने कहा, "तो फिर देर किस बात की, चलो करते हैं पार्टी।"

श्री अनुराग सक्सेना
वैज्ञानिक सहायक/ डी प्रचालन, तापबिघ- 1व2

राजभाषा गतिविधियों का आयोजन

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में तारापुर महाराष्ट्र स्थल में दिनांक 10 जनवरी, 2024 को राजभाषा वार्ता का आयोजन किया गया। तामस्थ में कार्यरत वरिष्ठ पदाधिकारियों के बीच राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने, कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग के प्रति उनकी रूचि बढ़ाने तथा केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के महत्व को हिंदी माध्यम से प्रचारित करने के उद्देश्य से इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

वार्ता का विषय था **"राजभाषा हिंदी से संबंधित संवैधानिक दायित्व एवं उच्च अधिकारियों की भागीदारी"**। इस वार्ता में वार्ताकार के रूप में डॉ. बिश्वनाथ झा, सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक(राजभाषा), केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, गृह मंत्रालय, भारत सरकार को आमंत्रित किया गया था। डॉ. झा को भारत सरकार के हिंदीतर भाषी कर्मचारियों को हिंदी भाषा प्रशिक्षण, नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग, कंप्यूटर एप्लिकेशन आदि पर प्रशिक्षण देने का 34 सालों का वृहत अनुभव है। वार्ता के दौरान उन्होंने कुशल प्रशिक्षक की भाँति अनेक उदाहरण और उद्धरण के माध्यम से उच्च अधिकारियों को राजभाषा संबंधित नियमों एवं उनके दायित्वों का बोध करवाया और अपने अधीनस्थ कर्मचारियों एवं अधिकारियों के समक्ष राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित अनुकरणीय उदाहरण प्रस्ततु करने की सलाह दी। स्थल निदेशक, तामस्थ, बिजलीघर निदेशक, तापबिघ 3व4 की गरिमामयी उपस्थिति में तारापुर महाराष्ट्र स्थल के सभी उच्च अधिकारियों ने तन्मयता के साथ वार्ता में सक्रिय रूप से भाग लिया।

तामस्थ में कार्यरत कार्मिकों के बीच राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने, उनमें हिंदी के प्रयोग के प्रति रुचि बढ़ाने तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों जैसे जटिल विषयों को हिंदी माध्यम से प्रचारित करने के उद्देश्य से परमाणु ऊर्जा विभाग और एनपीसीआईएल के अनुदेशों के अनुसार तारापुर महाराष्ट्र स्थल में दिनांक 24 फरवरी, 2024 को सेमिनार हॉल, नाभिकीय प्रशिक्षण केंद्र, तापबिघ-3व4 में अर्ध दिवसीय हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसके उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री को. व. गोपीदास, केंद्र निदेशक, तापबिघ 3व4 व स्थानापन्न स्थल निदेशक, तामस्थ थे। सामुदायिक स्वास्थ्य एवं रोगों से बचाव विषय पर श्रीमती के. एस. कल्पनादेवी, वैज्ञा. अधि/डी ने विस्तार से चर्चा की। दंत स्वास्थ्य एवं इनकी देखभाल विषय पर श्री संतोष पी उमाले, फोरमैन-बी ने व्याख्यान दिया और ओरल हाइजिन के तरीकों को बताया। इस कार्यक्रम के सत्राध्यक्ष डॉ विनय गौतम, चिकि.अधि/जी ने सभी प्रतिभागियों के विभिन्न प्रकार की शंकाओं का समाधान किया और समस्या

से निपटने के उपाय बताए। इस कार्यक्रम के आयोजन से कर्मचारियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के साथ-साथ राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ और तकनीकी विषयों पर बेहतर ढंग से हिंदी में लिखने- पढ़ने का उत्साह बढ़ा। सभी प्रतिभागियों ने फीडबैक सत्र में इस कार्यक्रम का सराहना की और भविष्य में इस तरह की अधिक से अधिक गतिविधियाँ आयोजित करने का अनुरोध किया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ संगोष्ठी संपन्न हुई।

तारापुर महाराष्ट्र स्थल में दिनांक 04 व 05 मार्च, 2024 को तामस्थ के कार्मिकों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिसमें दिनांक 04 मार्च, 2024 को कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि तारापुर महाराष्ट्र स्थल के स्थल निदेशक और राजभाषा कार्यान्वयन समित के अध्यक्ष श्री संजय मुलकलवार थे। श्री अशोक शिंदे, मानव संसाधन प्रमुख ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं राष्ट्रीय एकता एवं संपर्क भाषा के रूप में हिंदी के महत्व को बताया। दिनांक 05 मार्च, 2024 को तारापुर परमाणु बिजलीघर 3व4 के बिजलीघर निदेशक उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे और सभी प्रतिभागियों का स्वागत एवं संबोधन श्री जि. देवप्रकाश, उप महाप्रबंधक(मानव संसाधन) ने अपने अनुभव एवं सांस्कृति उदाहरण के माध्यम से प्रोत्साहित करके किया। कार्यशाला में श्री दिनेश कुमार चौहान, वरि. प्रबंधक(राजभाषा) ने राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क

भाषा के बारे में बताते हुए राजभाषा हेतु संवैधानिक प्रावधान, राजभाषा अधिनियम-1963, राष्ट्रपति के आदेश-1960, राजभाषा संकल्प-1968 एवं राजभाषा नियम-1976 के बारे में बताया। हिंदी वर्तनी एवं देवनागरी लिपि का मानकीकरण, टिप्पण/आलेखन और अभ्यास, शब्दावली निर्माण के सिद्धांत व शब्दावली अभ्यास, कंप्यूटर में यूनिकोड को इनेबल करना, गूगल इनपुट टूल, हिंदी टाइपिंग के बारे में जानकारी दी गई और इन विषयों से संबंधित लैन पर उपलब्ध अध्ययन सामग्री के विषय में प्रतिभागियों को सूचित किया गया।

श्री अंजनी कुमार ओझा,
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, तामस्थ

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

तारापुर महाराष्ट्र स्थल में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 08 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन कम्युनिटी सेंटर, तापबिघ 3व4 कॉलोनी में किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत सुबह 9:15 बजे हुई। उदघाट्न सत्र में मान्यवर अतिथि श्री एस. एम. मुलकलवार, स्थल निदेशक, तामस्थ, श्री के. वी. गोपिदास, केंद्र निदेशक, तापबिघ 3व4, श्री अशोक एस. शिंदे, प्रमुख(मानव संसाधन), तामस्थ उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के तौर पर सुश्री संगीता

वासवानी, को-फाउंडर/निदेशक, सानिधानम, पालघर को आमंत्रित किया गया। मान्यवर अतिथियों का स्वागत करने के बाद मंच पर उपस्थित गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का औपचारिक उदघाट्न किया गया। इसी क्रम में, 2024 में सेवानिवृत्त होने वाली महिला कर्मचारियों का सम्मान मान्यवर अतिथियों के करकमलों से पुष्पगुच्छ देकर किया गया। सेवानिवृत्त होने वाली महिला कर्मचारियों ने अपने कार्यकाल के अनुभवों को बताया। सभी मान्यवर अतिथियों ने सभी महिला कर्मचारियों को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई देते हुए तारापुर महाराष्ट्र स्थल पर उनके योगदान की सराहना की।

कार्यक्रम में अतिथि के तौर पर आमंत्रित सुश्री संगीता वासवानी, को-फाउंडर/निदेशक, सानिधानम, पालघर ने अपने संबोधन में एक सामान्य महिला से उद्यमी महिला तक के अपने निजी सफर का वर्णन किया। उन्होंने अपना अनुभव साझा करते हुए बताया कि कठिनाइयों एवं समस्याओं से भरा जीवन जीते हुए भी उन्होंने किस प्रकार राह निकाली और आगे बढीं। इसमें कोई दो राय नहीं कि अतिथि वक्ता का संबोधन तामस्थ की महिला कार्मिकों के लिए बहुत ही प्रेरणादायी रहा। इसके बाद तामस्थ महिला कार्मिकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए, जिसमें कविता, गाने, जोक्स, एकल नृत्य/समूह नृत्य आदि शामिल थे। श्रीमती ज्योत्सना रेड्डी एवं श्रीमती काजल ने कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का कुशल संचालन किया। श्रीमती स्नेहल गांगुर्डे ने धन्यवाद प्रस्ताव के साथ प्रथम सत्र के कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम के प्रथम सत्र की औपचारिक समाप्ति के पश्चात तामस्थ की महिलाओं के लिए स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम के अगले चरण में तामस्थ की सभी महिला कार्मिक बोईसर के नजदीक नांदगांव गईं, जहां सरकार द्वारा जारी “बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ” अभियान को चलाने का प्रयास करते हुए पथनाट्य का दो जगहों पर प्रदर्शन किया गया। तामस्थ की महिला कार्मिकों ने “बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ” थीम से संबंधित काफी स्लोगन तैयार किए और

होर्डिंग्स बनाए, जो कि उद्घोषणा करते हुए गाँवभर में प्रदर्शित किए गए। कई जगह “बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ” थीम वाले पोस्टर चिपकाए गए। कुल मिलाकर श्रीमती स्वेता अग्रवाल, अध्यक्ष, अंतरर्राष्ट्रीय महिला दिवस समिति के मार्गदर्शन में आयोजित अंतरर्राष्ट्रीय महिला दिवस का उक्त कार्यक्रम अत्यंत उत्साह एवं जोश के साथ मनाया गया।

श्रीमती स्नेहल गांगुर्डे
वरिष्ठ निजी सचिव, मासं, तामस्थ

10 नवंबर 2023 को आयुर्वेद दिवस के अवसर पर टाउनशिप में आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

तामस्थ में ‘ स्वच्छता ही सेवा’ अभियान की झलकियां

एनपीसीआईएल में सेवा के शानदार 25 वर्ष पूर्ण करने वाले कार्मिकों के सम्मान सामारोह की झलकियां

निगम सामाजिक दायित्व द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों के अंतर्गत तामस्थ के आसपास के विभिन्न स्कूलों में जरूरतमंद छात्राओं को साइकल वितरित किए गए।

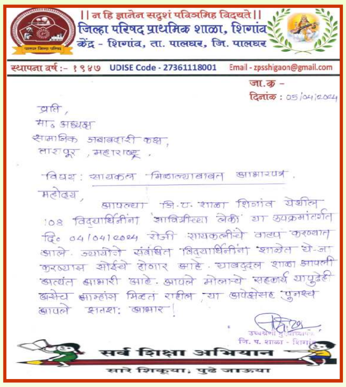

|| न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ||
जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळा, शिगांव
केंद्र - शिगांव, ता. पालघर, जि. पालघर
स्थापना वर्ष :- १९४७ UDISE Code - 27361118001 Email - zpsshigaon@gmail.com

जा.क्र -
दिनांक : 05/04/2024

प्रति,
मा. अध्यक्ष
सामाजिक जबाबदारी कक्ष,
तारापूर, महाराष्ट्र.

विषय : सायकल मिळाल्याबाबत आभारपत्र.

महोदय,
आपल्या जि. प. शाळा शिगांव येथील 108 विद्यार्थिनींना 'सावित्रीच्या लेकी' या उपक्रमांतर्गत दि० 04/04/2024 रोजी सायकलींचे वाटप करण्यात आले. ज्यायोगे संबंधित विद्यार्थिनींना शाळेत ये-जा करण्यास सोईचे होणार आहे. याबद्दल शाळा आपली अत्यंत आभारी आहे. आपले मोलाचे सहकार्य यापुढेही असेच आम्हांस मिळत राहील, या अपेक्षेसह पुनश्च आपले शतशः आभार!

उच्चश्रेणी मुख्याध्यापक
जि. प. शाळा - शिगांव

सर्व शिक्षा अभियान
सारे शिकूया, पुढे जाऊया

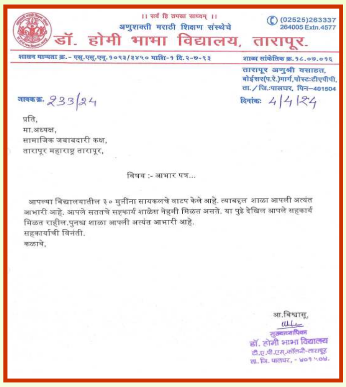

|| सर्व हि तपसा साध्यम् ||
अणुशक्ती मराठी शिक्षण संस्थेचे
डॉ. होमी भाभा विद्यालय, तारापूर.
(02525)263337 264005 Extn.4577
शासन मान्यता क्र.- एसु.एसु.एनु.१०९३/३४५० माशि-१ दि.२-७-९३ शाळा सांकेतिक क्र.१८.०७.०१६
तारापूर अणुश्री वसाहत, बोईसर(प.रे.)मार्ग, पोस्टःटीएपीपी, ता./जि.:पालघर, पिन–401504

जावक क्र. 233/24
दिनांकः 4/4/24

प्रति,
मा.अध्यक्ष,
सामाजिक जबाबदारी कक्ष,
तारापूर महाराष्ट्र तारापूर,

विषय :- आभार पत्र...

आपल्या विद्यालयातील ३० मुलींना सायकलचे वाटप केले आहे. त्याबद्दल शाळा आपली अत्यंत आभारी आहे. आपले सततचे सहकार्य शाळेस नेहमी मिळत असते. या पुढे देखिल आपले सहकार्य मिळत राहील.पुनश्च शाळा आपली अत्यंत आभारी आहे.
सहकार्याची विनंती.
कळावे,

आ.विश्वासू,
मुख्याध्यापिका
डॉ. होमी भाभा विद्यालय
टी.ए.पी.एस.कॉलनी-तारापूर
ता. जि. पालघर, - ४०१ ५०४.

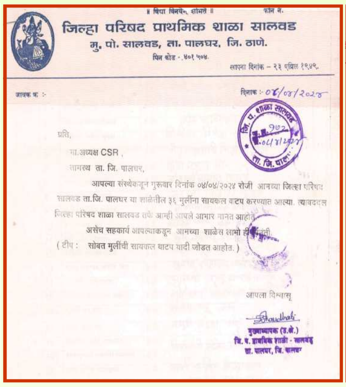

॥ विद्या विनयेन शोभते ॥ फोन नं.
जिल्हा परिषद प्राथमिक शाळा सालवड
मु. पो. सालवड, ता. पालघर, जि. ठाणे.
पिन कोड - ४०१ ५०४.
स्थापना दिनांक – २३ एप्रिल १९४९.

जावक क्र :-
दिनांक :- 08/04/2024

प्रति,
मा.अध्यक्ष CSR,
तामस्थ ता. जि. पालघर,

आपल्या संस्थेकडून गुरुवार दिनांक ०४/०४/२०२४ रोजी आमच्या जिल्हा परिषद सालवड ता.जि. पालघर या शाळेतील ३६ मुलींना सायकल वाटप करण्यात आल्या. त्याबद्दल जिल्हा परिषद शाळा सालवड तर्फे आम्ही आपले आभार मानत आहोत.
असेच सहकार्य आपल्याकडून आमच्या शाळेस लाभो ही विनंती.
(टीप : सोबत मुलींची सायकल वाटप यादी जोडत आहोत.)

आपला विश्वासू
मुख्याध्यापक (उ.श्रे.)
जि. प. प्राथमिक शाळा - सालवड
ता. पालघर, जि. पालघर

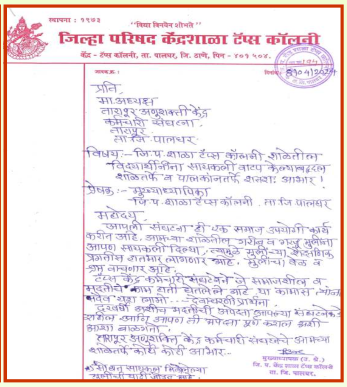

स्थापना : १९७३
"विद्या विनयेन शोभते"
जिल्हा परिषद केंद्रशाळा टॅप्स कॉलनी
केंद्र - टॅप्स कॉलनी, ता. पालघर, जि. ठाणे, पिन - ४०१ ५०४.

जावक क्र. :
दिनांक : 8/04/2024

प्रति,
मा. अध्यक्ष
तारापूर अणुशक्ती केंद्र
कर्मचारी संघटना,
तारापूर
ता. जि. पालघर.

विषय :- जि. प. शाळा टॅप्स कॉलनी शाळेतील विद्यार्थीनींना सायकली वाटप केल्याबद्दल शाळेतर्फे व पालकांनतर्फे शतशः आभार!

प्रेषक :- मुख्याध्यापिका
जि. प. शाळा टॅप्स कॉलनी, ता. जि. पालघर

महोदय,
आपली संघटना ही एक समाज उपयोगी कार्य करीत आहे. आमच्या शाळेतील गरीब व गरजू मुलींना आपण सायकली दिल्या, त्यामुळे मुलींच्या शैक्षणिक प्रगतीस हातभार लागणार आहे. मुलींचा वेळ व श्रम वाचणार आहे.
टॅप्स केंद्र कर्मचारी संघटनेने जे समाजशील व मदतीचे काम हाती घेतलेले आहे, या कामास त्यांना सदैव यश लाभो... देवाचरणी प्रार्थना.
दरवर्षी अशीच मदतीची अपेक्षा आपल्या संघटनेकडे राहील आणि आपण ती अपेक्षा पूर्ण कराल अशी आशा बाळगतो.
तारापूर अणुशक्ति केंद्र कर्मचारी संघटनेचे आमच्या शाळेतर्फे कोटी कोटी आभार...

मुख्याध्यापक (उ. श्रे.)
जि. प. केंद्र शाळा टॅप्स कॉलनी
ता. जि. पालघर.

*) सोबत सायकल मिळालेल्या मुलींची यादी जोडत आहे.

विंट की गतिविधियां

वर्किंग वुमेन इन एनपीसीआईएल, टीएमएस (विंट) ने अपने नियमित प्रयासों से जरूरतमंदों तक पहुंचने के लिए कदम बढ़ाते हुए तारापुर महाराष्ट्र साइट से लगभग 60 किमी दूर पालघर जिले के डहाणू तालुका में चालनी तिवासपाड़ा में एक ग्रामीण स्कूल को खोजा है, जिसमें केवल 35 छात्र हैं। इस जिला परिषद स्कूल में केवल दो कर्मचारियों की ही तैनाती की गई है और इन दो शिक्षकों के नेतृत्व में ही प्रबंध किया जाता है।

विंट ने अपने सीमित संसाधनों के साथ छात्रों को मूलभूत आवश्यकताओं जैसे स्टेनलैस स्टील की थालियां, कटोरियां, गिलास, पानी की बोतलें, चटाइयां, इलेक्ट्रिक केटल, खाद्य सामग्री आदि भेंट कीं, जिसमें लगभग 25000/- रुपए का खर्च आया। श्री वी के शर्मा, पूर्व स्थल निदेशक, तामस्थ ने तारापुर से रवाना होते समय एक टैबलेट और एक मोबाइल फ़ोन भेंट दिया था, जिन्हें स्कूल के प्रबंधन को सौंपा गया, ताकि ऑनलाइन सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाया जा सके।

विंट तारापुर महाराष्ट्र स्थल के प्रबंधन वर्ग का हार्दिक आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने इस दूरस्थ स्कूल तक पहुंचने के लिए सभी लॉजिस्टिक सहायता प्रदान की।

इसके अलावा, विंट ने दूध के खाली पैकेट इकट्ठे करने के साथ-साथ, तामस्थ निवासियों और परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालयों के विद्यार्थियों से प्लास्टिक के पैकेट, रैपर, पाउच इकट्ठे करना शुरू किया है। वर्ष 2024 की पहली तिमाही में, विंट ने मैसर्स इकोकारी को 26 किलो वेस्ट प्लास्टिक रिसाइकलिंग के लिए भेजी है। मैसर्स इकोकारी एक सामाजिक उद्यम है, जो एकल प्रयोग प्लास्टिक पैकेट, रैपर को रिसाइकल करते हुए पर्यावरण को संरक्षित करता है। पर्यावरण के संरक्षण में इस योगदान के लिए विंट को मैसर्स इकोकारी, पुणे की ओर से प्रशंसा प्रमाणपत्र भी मिला। विंट अपने सभी सदस्यों के समर्थन के लिए आभारी है।

श्रीमती हिल्डा सिक्वेरा
वरिष्ठ प्रधान निजी सचिव, तामस्थ

महिला विकास मंडल की गतिविधियाँ

महिला विकास मंडल में सभी सदस्य अणुविकास कॉलोनी और कुछ सदस्य अणुश्री कॉलोनी के हैं। यह पूर्णतया महिलाओं द्वारा चलाया जाता है। महिला विकास मंडल में एक समिति चयनित है, जिसके द्वारा सालाना कार्यक्रमों को सुचारू रूप से किया जाता है। सभी महिलाएं बहुत प्रतिभावान हैं। प्रत्येक मीटिंग में अनेक प्रकार के प्रोग्राम किए जाते हैं, जिसमें महिलाओं को जागरूक करने के साथ-साथ उनका मनोरंजन भी होता है।

इस साल महिला विकास मंडल की सदस्यों ने तारापुर महाराष्ट्र स्थल का दौरा किया, जिससे हमें उन्हें नाभिकीय संयंत्र कैसे काम करता है, किस प्रकार ऊर्जा उत्पन्न होती है तथा कैसे उपयोग में लाने हेतु ग्रिड को भेजा जाता है, आदि जानकारी मिली। सामाजिक कार्यों में सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सभी सदस्यों द्वारा दी गई धनराशि में से कुछ प्रतिशत धन सामाजिक कार्यों के लिए दान दिया गया। इस बार महिलाओं ने अपनी तरफ से भी धन राशि दी, जिससे कन्या विद्यालय व बालवाड़ी विद्यालय में बहुत-सी जरूरत की वस्तुएं प्रदान करने का अवसर प्राप्त हुआ। महिला मंडल का वार्षिक उत्सव प्रत्येक वर्ष उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस वर्ष वार्षिक उत्सव में कृष्ण-लीला का प्रोग्राम रखा गया। सभी पात्रों ने सुंदर तरीके से अभिनय प्रस्तुत किया। प्रतिभावान महिलाओं ने बहुत ही कम समय में अपनी टीम बनाकर खेल के प्रति

उत्साह का उदाहरण पेश किया। यह मैच पहली बार खेला गया तथा सदस्यों ने अति उत्तम प्रदर्शन किया। महिला मंडल द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का कार्यक्रम भी हर्ष के साथ मनाया गया। इस बार 31 महिलाओं को भेंट के साथ सम्मानित किया गया।

अणु बाल विकास संस्थान (एबीवीएस) मानसिक दिव्यांग बच्चों का स्कूल है। इस स्कूल को महिला विकास मंडल की प्रबंधन समिति द्वारा संभाला जाता है। स्कूल को 'सीएसआर—एनपीसीआईएल' द्वारा फंडिंग की जाती है। इस स्कूल में अनेक प्रकार के त्यौहार और गतिविधियां मनाई जाती हैं, जिससे बच्चों को उनका वास्तविक मतलब समझा सके, जैसे मकर संक्रांति, वसंत पंचमी, होली, रक्षाबंधन, गणेश चतुर्थी, दीपावली, इत्यादि। बच्चों को रंगोली, दिया, पेंटिंग, तोरण बनाना, राखी बनाना, सिमेंट के गमले बनाना, चित्रकला इत्यादि भी सिखाया जाता है।

श्रीमती कना बिस्वास

सचिव, महिला विकास मंडल

ऊर्जा महिला मंडल की गतिविधियां

हमारा "ऊर्जा महिला मंडल" हमारी अध्यक्षा श्रीमती वृंदा मुलकलवार मैडम के संरक्षण में बहुत ही शालीनता से चल रहा है। हमारे मंडल में विभिन्न प्रकार की गतिविधियां, जैसे गरबा नृत्य, रंगोली प्रतियोगिता, सामाजिक कार्य जिसमें हमने जिला परिषद स्कूल तमसई जाकर वहां बच्चों को उनकी आवश्यकता के अनुसार सामग्री वितरित की। वर्ष के अंत में हमारे सदस्य कैगा पावर प्लांट घूमने गए। वह बहुत ही अविस्मरणीय यात्रा रही।

नव वर्ष के आगमन पर हमने विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। फिर हमने अपने मंडल का वार्षिकोत्सव अपने परिवार के साथ बहुत ही धूमधाम से मनाया। तदोपरांत हमने हमारे सदस्यों को विभिन्न प्रकार की सुरक्षा से अवगत कराया। मार्च माह के अंत में "अंश लेडीज़ क्लब" मुंबई के 100 सदस्यों का भव्य स्वागत किया और विभिन्न विषयों पर चर्चा की। इस प्रकार हमारा "ऊर्जा महिला मंडल" हमारे सदस्यों को उनकी प्रतिभाओं, रूचियों और उनके आत्मविश्वास को विभिन्न माध्यमों से प्रेरित करने का एक शानदार मंच है। हमारे मंडल द्वारा संचालित "टॉडलर्स एकेडमी" स्कूल मे 230 बच्चे हैं। इन बच्चों को हमारे मंडल की बहुत ही प्रतिभावान अध्यापिकाएं न सिर्फ शिक्षा देती हैं, बल्कि उनको विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों जैसे कविता पाठ, नृत्य, ड्राइंग आदि से उनका भविष्य बनाने में जुटी हुई है।

श्रीमती अल्का खण्डेलवाल
सचिव (ऊर्जा महिला मंडल)

पांच मिनट की देरी

यह साधारणत: 25 वर्ष पूर्व की घटना है। मैं अपने परिवार के साथ अंबरनाथ शहर में रहता था। माध्यमिक, उच्च माध्यमिक तक की मेरी पढ़ाई अंबरनाथ में ही हुई थी, पर आगे की तकनीकी पढ़ाई हेतु मेरा दाखिला माटुंगा स्थित एक प्रसिद्ध अभियांत्रिकी महाविद्यालय में हुआ था। अब मैं रोजाना अंबरनाथ से माटुंगा मध्य रेल की रेलगाडी से प्रवास करने लगा था, महाविद्यालय का समय ठीक सुबह 10.00 बजे होने के कारण मुझे सुबह 8.30 बजे ट्रेन पकड़नी होती थी। सुबह 7.00 से 11.00 बजे तक मध्य रेल से मुंबई और उसके उपनगर में हजारों लोग प्रवास करते थे, इसलिए इस समय दिन की तुलना में अधिक भीड़ रहती थी। मैं रोज अंबरनाथ स्टेशन से निकलने वाली 8.35 की धीमी गाड़ी पकड़ता था। यह गाड़ी अंबरनाथ से ही स्टार्ट होती थी, इसलिए मुझे बैठने के लिए जगह मिलती थी। पर जैसे– जैसे यह गाड़ी मुंबई की तरफ जाती थी, वैसे-वैसे उसमें यात्रियों की भीड़ बढ़ती जाती थी। फिर तो ठीक से खड़े होने के लिए भी मुश्किल से जगह मिलती थी। आपके निश्चित स्थान पर उतरने के लिए आपको एक स्टेशन पहले ही दरवाजे की तरफ बढ़ना होता था। रेलगाड़ी हर स्थानक पर एक मिनट से कम समय के लिए रूकती थी और अगर आप तैयार नहीं तो उतरना मुश्किल होता था। रोजाना यात्रा करके मैं रेल की इस व्यवस्था में ढल चुका था।

एक दिन अंबरनाथ स्टेशन 5 मिनट की देरी से पहुंचने के कारण मेरी सुबह 8.35 वाली लोकल छूट गई। उसके तुरंत बाद मैंने बदलापुर से आने वाली गाडी पकड़ ली। फास्ट लोकल होने की वजह से यह स्लो लोकल की तुलना में ज्यादा भीड़भाड़ वाली थी। बड़ी मुश्किल से मुझे खड़े होने के लिए जगह मिली थी। यह गाड़ी कुछ ही स्थानकों पर रूकती थी, इसलिए प्रत्येक स्टेशन पर इसमें चढ़ने वाले प्रवासियों की संख्या ज्यादा थी। जैसे-जैसे गाड़ी आगे बढ़ रही थी, वैसे-वैसे चढ़ने वाले प्रवासियों की संख्या बढ़ रही थी। मेरा निश्चित स्थानक माटुंगा था, पर यहां तेज गाडी नहीं रूकती थी। इसलिए मैंने तय किया कि मैं पहले कुर्ला स्टेशन उतरूंगा और वहां से धीमी गाड़ी पकड़कर माटुंगा जाऊंगा। कुर्ला आने से पहले ही मैं दरवाजे की तरफ बढ़ने की कोशिश कर रहा था। गाड़ी ने प्लेटफॉर्म पर आते ही अपनी गति धीमी कर दी। प्लेटफॉर्म यात्रियों से खचाखच भरा था। गाड़ी रूकने से पहले ही बाहर के यात्रियों ने अंदर आना शुरू कर दिया। मैंने उतरने के लिए काफी जोर लगाया। मेरा बैग और मेरा एक पैर अंदर भीड़ में ही फंस गया। गाड़ी अभी शुरू होने ही वाली थी कि मैंने बाहर की तरफ प्लेटफॉर्म पर अपने आपको गिरा दिया। इस संघर्ष में मेरा बैग और एक पैर का जूता ट्रेन में ही रह गया और ट्रेन अपनी गति तेज करके मेरे सामने से आगे निकल गई। मैं प्लेटफॉर्म पर गिरा पड़ा था। मेरी कमीज मेरे पतलून से बाहर आ चुकी थी। एक पैर में जूता था, इतने में एक टीटी ने

मुझे टिकट दिखाने के लिए कहा। मेरा जो बैग ट्रेन में छूट गया था, उसमें ट्रेन का पास, महाविद्यालय का पहचान पत्र, जेब खर्च के पैसे, मेरा खाने का डिब्बा, किताबें आदि सामान था। मैंने टीसी को मेरी आप-बीती सुनाई, वह भला इंसान था। उन्होंने पहले मुझे पानी पिलाया और एक प्लास्टिक की थैली लाकर दी, ताकि मैं अपना एक जूता उसमें रख सकूं। उन्होंने आखिरी स्टेशन सीएसएमटी जाने की सलाह दी, शायद रेलगाड़ी में या फिर वहां पर किसी कार्यालय में बैग जमा किया हुआ मिल जाए। मैं उनकी सलाह के मुताबिक आखिरी स्टेशन पहुंचा और प्लेटफॉर्म पर खड़ी ट्रेनों में तलाश करने लगा।

आसपास के सहायता केंद्र पर भी मैंने बैग के बारे में पूछताछ की, पर इतना सबकुछ करने पर भी बैग नहीं मिला। सारे प्रयास विफल हो जाने पर मैंने अपने घर जाने का निर्णय लिया और मैं ट्रेन में बैठकर घर निकला। घर में क्या बताऊं? महाविद्यालय में क्या बताऊं? मन में ऐसे अनेक प्रश्न उठ रहे थे। मैं नंगे पांव हाथ में जूते की थैली लेकर दोपहर तक पहुंचा।

घर पहुंचा तो देखा कि दरवाजा बंद है और दरवाजे पर ताला लगा था। पड़ोस में पूछने गया तो पड़ोस की चाची ने कहा, 'तुम्हारी मां को महाविद्यालय से फोन आया कि तुम महाविद्यालय में आज आए नहीं हो और तुम्हारा बैग और एक जूता किसी ने जमा कराया है। इसलिए तुम्हारे मां-पिताजी तुम्हें ढूंढने वहां गए हैं। यह बात सुनकर हम भी चिंता में थे।'

चाची ने मुझे अपने घर में बिठाकर खाना खिलाया और आराम करने के लिए कहा। मेरा बैग महाविद्यालय में कैसे पहुंचा, मैं सोचता रह गया। शायद जब ट्रेन कुर्ला स्टेशन से आगे बढ़ी होगी, तो कुछ यात्रियों के ध्यान में यह बात आयी होगी कि जो लड़का कुर्ला प्लेटफॉर्म पर गिर गया था, उसका बैग और जूता अंदर ही रह गया है। उनमें से किसी भलेमानस ने बैग खोलकर देखा तो उन्हें मेरा महाविद्यालय का पहचान पत्र मिला। मेरा बैग मुझ तक पहुंचाने का, महाविद्यालय यह एक ही रास्ता था। इसलिए उस व्यक्ति ने महाविद्यालय के प्राचार्य जी से मिलकर मेरा सामान उन्हें सौंप दिया। उन्होंने इस बात को गंभीरता से लेकर मेरे परिवार को फोन करके सूचित किया।

यह समाचार मिलते ही मां के पैरों तले जमीन खिसक गई। उसने पड़ोस के चाचा की मदद से पिताजी को सूचित किया और तुरंत रेलवे स्टेशन पर आने को कहा। मां-पिताजी जल्दी महाविद्यालय की तरफ आकर माटुंगा पहुंचे। मां की आखों से निरंतर आंसू बह रहे थे, तो पिताजी काफी चिंता में थे। महाविद्यालय में मेरा बैग और जूता देखकर तो मेरी मां जोर-जोर से रोने लगी। प्राचार्य और शिक्षकों ने मां को समझाने की कोशिश की, सबकुछ ठीक होगा, सब मिलकर जानकारी जुटाने की कोशिश करेंगे, ऐसे बोलकर दोनों को विश्वास दिलाया। कुछ शिक्षकों ने मेरे मां-पिताजी के साथ नजदीक के रेलवे स्थानकों में जाकर वहां के सुरक्षाकर्मी और स्टेशन मास्टर से मेरे बारे में जानने की कोशिश की, पर उन्हें कुछ भी जानकारी नहीं मिल पाई। रेल पुलिस ने एक दिन इंतजार करने को कहा।

दोनों ही दुखी मन से घर की तरफ निकले, मां मन ही मन भगवान से हर घड़ी प्रार्थना कर रही थी कि मैं ठीक-ठाक घर पर आ जाऊं। शाम होते-होते भारी मन से मां-पिताजी घर आए। मैं और मेरे पड़ोस के लोग उनका इंतजार कर रहे थे। जैसे ही मां की नजर मुझपर पड़ी, मां -पिताजी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मां ने मुझे गले से लगाया, फिर मैंने सारी आपबीती सुनाई और उन्होंने फोन पर समाचार से लेकर घर आने तक की सारी हकीकत सुनाई।

सारा माहौल अब खुशी में बदल चुका था। रात को मां ने भगवान की विशेष पूजा करके सभी पड़ोसियों को खीर खिलाई और मन ही मन भगवान को धन्यवाद दिया। आज भी मैं जब रेलवे से यात्रा करता हूं, तो मेरे स्मृतिपटल पर अंकित हुई यह घटना याद आती है।

श्री सोमनाथ गणपत सुरोशे
वरिष्ठ तकनीशियन/एच, सीएमयू, तापबिघ 3व4

सुनहरा सपना

दिनभर की भागदौड़ से थकी-हारी सुनंदा सोने की कोशिश कर रही थी। सिर और पैर में असहनीय दर्द, फिर भी बेहत खुश थी वह। आज बालेश्वर के लघु– उद्योगपतियों के सम्मेलन में इकलौती महिला उद्योगपति थी वह। नारी शिक्षा से जुड़े एक एनजीओ ने भी सुनंदा को बतौर अपना एंबेसेडर चुना था। जिंदगी भर औरत होने पर खुद को कोसती थी वह। आज पहली बार नारी होने पर गर्व महसूस कर रही थी। आज दिनभर की थकान मिटाने के लिए थोड़ा-सा बाम लगाकर अपने शरीर को बिस्तर पे डाल दिया था, परंतु सुनंदा की बंद आंखों के सामने आ रही थी- उथल पुथल से भरी अपनी जिंदगी के संघर्ष की गाथा।

पच्चीस साल पूर्व, जब सुनंदा आठ साल की थी उसकी मां और पिताजी दुनिया से चल बसे। तीन साल तक

काका ने सुनंदा और उसके भाई को अच्छी तरह से पाला था। फिर पैसों की तंगी के चलते सुनंदा को इधर-उधर काम पर लगा दिया। काका को खुद का कोई बेटा नहीं था, तो उन्होंने सुनंदा के छोटे भाई को ही अपना बेटा बना लिया। पर सुनंदा की हालत खराब थी। उसे रोज एक वक्त का पेटभर खाना मिलना मुश्किल था और पहनने के लिए मिलते थे काका की बेटी के पुराने कपड़े। लेकिन सुनंदा अपने हालात से समझौता करके खुश थी।

एक दिन शहर से गोपीबाबु घर आए। काका ने सुनंदा से सामान बांधने के लिए कहा। सुनंदा चली शहर गोपीबाबु के घर काम करने। सुनंदा के काका को दो साल का अग्रिम मिल चुका था। बारह साल की सुनंदा तो बस यह सोचकर खुश हुई थी कि उसे अब शहर में रहना है और साथ में अच्छा खाना भी मिलेगा। दो साल बीत गए, इस बीच वह अच्छा खासा रसोई बनाना सीख गई थी। वैसे भी सुनंदा भोजन बनाने में परिपक्व थी और घर की मालकिन ने सुनंदा के आने के बाद से गैस चुल्हा नहीं छुआ था। सुनंदा भी मेहनत से सीख रही थी, फिर भी मालकिन कभी खुश नहीं होती थी। लेकिन सुनंदा खुश थी, मालिक की बेटी के कपड़े पहनकर और बचा-खुचा खाना खाकर। एक दिन मालकिन के नारी समिति वाले दोस्त घर आए। उनके कहने पर मजबूरन सुनंदा को स्कूल भेजना पड़ा। वह घर के काम पूरे होने के बाद रात को पढ़ती थी। उसमें भी मालकिन की शिकायत थी कि देर रात रौशनी से बिजली का बिल बढ़ रहा है। मुश्किलों के बावजूद सुनंदा ने दसवीं पास कर ली और थोड़ी अंग्रेजी भी सीख ली। पर ऐसे हालात में आगे पढ़ने के लिए न उसकी इच्छा थी और ना मालकिन की इच्छा थी उसको पढ़ाने की।

वक्त भी करवट लेता है। उस रात मालकिन और बेटी घर पर नहीं थे। सुनंदा रात के खाने के बर्तन धोने के बाद गोपीबाबु के कमरे में दूध रख के आ गई थी। तब वह शराब ले रहे थे। सुनंदा अपने कमरे में आकर सो गई। अजीब सी कंपन से वह जाग गई, उसके कपड़े आधे खुले थे और कपड़े के अंदर गोपीबाबु का हाथ था। वह समझ नहीं पा रही थी कि करना क्या है? बस हाथ में आई हुई पानी की बोटल गोपीबाबु के सिर पर मार कर वह घर से भागी। अपने कपड़े संभालकर जैसे-तैसे एक अंधेरी जगह पर पेड़ के पीछे बैठ गई। बढ़ती धड़कन के साथ दिमाग भी काम नहीं कर रहा था कि आखिर जाए तो कहां जाए। काका के पास जाएगी, तो फिर से यहीं ले आएंगे। मालकिन

भी नहीं मानेगी कि गोपीबाबु ने ऐसी कोई हरकत की है। इसी उथलपुथल में सुनंदा को हर जगह अंधेरा दिखाई देने लगा। अचानक उसे स्कूल की सहेली प्रियंका की याद आई। सुनंदा नंगे पैर भागी। जैसे ही प्रियंका ने अपने घर का दरवाजा खोला, सुनंदा रोने लगी। प्रियंका उसे गले लगाकर बोली, "अब तू कहीं नहीं जाएगी, मेरे साथ ही रहेगी।"

कुछ महीने पहले एक एक्सीडेंट में प्रियंका के मां और पापा की मौत हुई थी। एक बेसहारा को दूसरे बेसहारे का सहारा मिल गया। दो साल कब गुजर गए, पता नहीं चला। प्रियंका चिंतित थी, सुनंदा के भविष्य के बारे में। उसको पढ़ाने की या टंकण जैसा कुछ प्रशिक्षण करवाने की कोशिश बार-बार नाकामयाब रही। सुनंदा के लिए प्रियंका का खाना बनाना और उसकी देखभाल करना ही उसकी दुनिया थी।

एक दिन प्रियंका के पापा के करीबी दोस्त रामबाबु प्रियंका से मिलने आए थे। रात्रि भोजन में बिरयानी और रसगुल्ला खाने के बाद उन्हें यकीन नहीं हुआ कि वह सुनंदा ने बनाया था। वे आर्मी में थे और पूरी दुनिया घुम चुके थे। पर सुनंदा का बनाया हुआ खाना सबसे अलग था। उन्होंने अपने नए घर के गृहप्रवेश के कार्यक्रम में खाना बनाने की जिम्मेदारी सुनंदा को दे दी। यह सुनकर सुनंदा थोड़ी हैरान और परेशान हो गई। घर में खाना बनाना एक बात थी, पर इतने लोगों के लिए वह कैसे कर पाएगी? मिसेस रामबाबु बोली, "मेरा बेटा अभि तुम्हारे साथ रहेगा और पांच-छह लोग तुम्हारी मदद के लिए रहेंगे।" तब जाकर सुनंदा की जान में जान आयी। इस मामले में प्रियंका सुनंदा से एक कदम आगे थी। प्रियंका ने 'सुनंदा रसोईघर' नाम का विजिटिंग कार्ड भी छपा लिया। गृहप्रवेश वाले दिन सुनंदा के नेतृत्व में बना खाना उम्मीद से ज्यादा अच्छा बना था। सारे विजिटिंग कार्ड बंट गए। सबसे बड़ी खुशी की बात तो यह थी कि तीन अन्य समारोह के लिए भी उसे ऑर्डर मिल गया।

यह एक नए अध्याय की शुरूआत थी। प्रियंका ने अपने घर की पहली मंजिल के किराएदार को निकालकर सुनंदा के लिए कार्यालय बना दिया। इन दोनों के साथ में थे अभि और एक कर्मचारी जदुकाका। सुबह से लेकर रात्रि तक मशीन की तरह मेहनत कर रही थी सुनंदा। कभी खाने के लिए तरसती सुनंदा आज शहर को खाना खिला रही थी।

इस बीच प्रियंका नौकरी करने के लिए ऑस्ट्रेलिया चली गई और सुनंदा अपनी ही दुनिया में गुम हो गई। अभि ने प्रियंका की कमी को बखूबी सम्भाला। दस साल में दोनों के सहयोग से 'सुनंदा रसोईघर' शहर का सबसे बड़ा हॉटेल बन गया। सफलता के शिखर पर भी प्रियंका के बिना अकेलापन महसूस करती थी सुनंदा। दस साल में अभि ने उसका दिल जीत लिया था, पर दोनों में से किसी ने भी इजहार नहीं किया।

अगली सुबह अभि ने राजधानी में सौ एकड़ जमीन पर 'सुनंदा रीजेंसी' हॉटेल बनाने का एक प्लान सुनंदा के सामने रखा। व्यापार को पूरे देश में फैलाने का सुझाव था। एग्रीमेंट में 99 वर्षों का लीज़ देखकर सुनंदा बोली-"उसके बाद क्या?" यह सुनकर अभि जोर-से हंस पड़ा और बोला "नंदा! तब तक न, हम तो नहीं जीएंगे आगे की हमारे बच्चे जानें।" मुस्कुराहट छिपाकर सुनंदा बोली, "हमारे बच्चे?" नजर झुकाए शरमा रहा था अभि। उसकी गोद में सर रखकर सुनंदा बोली – "उसमें से पचास एकड़ न हमारा है, न हमारे बच्चों का होगा। पचास एकड़ में गरीब और अनाथ लड़कियों के लिए संस्थान बनाएंगे।" उसके माथे को चूमते हुए अभि बस इतना ही बोल पाया– "सब मंजूर है।"

दोनों की धड़कनें मिल रही थीं। सुनंदा के मन में था उस जैसी लड़कियों का भविष्य सुनहरा बनाने का सपना।

श्री चिन्मय कुमार पाति
स्वास्थ्य भौतिकी इकाई, तापबिघ 3व4

स्वमूल्यांकन

आई.ए.एस. की ट्रेनिंग पूरी करने के बाद रमाशंकर आज अपने गांव वापस लौट रहा है और सारा गांव पलकें बिछाए उसके स्वागत की तैयारी में लगा हुआ है। जैसे ही हाईवे से उसकी गाड़ी गांव की तरफ जाने वाली पगडंडी की तरफ मुड़ती है, वैसे ही उसके बचपन की सारी यादें तरोताजा हो जाती हैं। यहां तक का सफर रमाशंकर के लिए आसान नहीं था जिसके लिए उसने कठोर परिश्रम किया और जब उसने सही मार्ग का चयन किया तब जाकर उसे सफलता मिली। गांव में बेसिक मूलभूत सुविधाओं का अभाव था। रमाशंकर को बचपन से ही हिंदी साहित्य, इतिहास जैसे विषयों में रुचि थी। गणित व विज्ञान विषय उसकी समझ से परे थे। अंग्रेजी विषय में भी वह कमजोर था। हालांकि अब भी उसकी अंग्रेजी इतनी अच्छी नहीं है। लेकिन धीरे-धीरे उसने अपनी इस कमी पर काफी हद तक नियंत्रण भी पा लिया है। जब रमाशंकर दसवीं कक्षा में उत्तीर्ण हुआ, तो उसके सबसे अधिक अंक हिन्दी और सामाजिक विषय में थे और गणित व विज्ञान विषय में तो वह जैसे-तैसे पास ही हुआ था। रमाशंकर को अब पता चल गया था कि गणित व विज्ञान विषय उसके बस की बात नहीं है। उसने कला विषय को ही आगे चुनने का मन बना लिया। रमाशंकर के चाचा दिल्ली में रहते थे और कभी-कभी गर्मियों की छुट्टियों में गांव में आते थे।

रमाशंकर के चाचा जब दिल्ली से घर आए तो उन्होंने पूछा, "बेटा आपको दसवीं के बाद अब आगे क्या करने का इरादा है।" तब रमाशंकर ने कहा, "चाचा मुझे तो हिंदी व सामाजिक विषय बहुत अच्छे लगते हैं और मैं आगे इन्हीं इन विषयों से ही पढ़ाई जारी रखना चाहता हूं।" रमाशंकर के चाचा ने कहा, "बेटा तुम बहुत बड़ी गलती कर रहे हो। अंग्रेजी, विज्ञान व गणित विषय आज के जमाने की जरूरत है। अगर तुम अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहते हो, तो तुम्हें इन विषयों को सीखना पड़ेगा तभी आगे बढ़ पाओगे।"

रमाशंकर के पिताजी ने कहा, "बेटा, चाचा जी की बात मानो। विज्ञान वर्ग में प्रवेश ले लो।" रमाशंकर के पिताजी ने कहा,"बेटा तू कुछ नहीं कर पाएगा, जिस तरह मैं अपनी जिंदगी बर्बाद कर रहा हूं, क्या तू भी उसी तरह अपनी जिंदगी बर्बाद करना चाहता है।" रमाशंकर के पिताजी ने एक बात न सुनी और उसका प्रवेश विज्ञान विषय में करवा दिया। रमाशंकर मेहनती तो था परंतु जो विषय उसे समझ में न आए उसमें वह क्या कर सकता है। ग्यारहवीं में वह जैसे-तैसे पास हो गया, लेकिन जब बारहवीं की परीक्षा देने के बाद बोर्ड परीक्षा परिणाम निकला तो वह विज्ञान व गणित विषय में फेल हो गया।

जब यह बात उसके ताऊजी को पता चली तो ताऊजी ने उसको फोन पर ही फटकारा और कहा, "बेटा तुम्हारा कुछ नहीं हो सकता, तुम तो जीरो हो। तुम अपने पिताजी की तरह बस खेतों में ही लगे रहोगे।" रमाशंकर फिर से हिंदी साहित्य व इतिहास विषय का चयन करता है और अगले साल बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण हो जाता है। बी. ए. में भी वह अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो जाता है। रमाशंकर का उद्देश्य अपने ताऊजी के अहंकार को नष्ट करने से ज्यादा यह दिखाना था कि गांव में रहकर भी लोग सफलता पा सकते हैं। उसके ताऊजी ने उसके पिता के मन-मस्तिष्क पर जो नकारात्मक सोच का ताला लगाया है, उसे वह अपनी सकारात्मक सोच, मेहनत और परिश्रम की कुंजी से खोलकर दिखा देगा।

रमाशंकर ने ठान लिया कि वह आई.ए.एस. की तैयारी करेगा जिसके लिए वह दिल्ली के मुखर्जी नगर आ गया। वहां उसने कोचिंग सेंटर में प्रवेश ले लिया। सिविल सेवा परीक्षा के लिए रमाशंकर ने अपने

विषय में हिंदी साहित्य और भारतीय इतिहास को चुना। रमाशंकर ने ठान लिया था कि पहले ही प्रयास में सफलता पानी है। रमाशंकर ने दिन रात एक कर दिया, परिणामस्वरूप पहले ही प्रयास में उसने प्री परीक्षा और मेन परीक्षा में सफलता हासिल कर ली। अब बस एक ही पड़ाव पार करना था और वो था 'फाइनल इंटरव्यू' जो कि उसके लिए सबसे बड़ी चुनौती थी। उसके इंटरव्यू कमेटी के चेयरमैन मिस्टर मल्होत्रा थे जिनके बारे में प्रसिद्ध था कि वो इंग्लिश बोलने वाले, आईआईटी वाले इंजीनियर को ज्यादा पसंद करते हैं और हिंदी वालों को कम पसंद करते हैं। कमेटी के सभी सदस्यों ने उससे आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक विषयों पर काफी घुमावदार सवाल किए थे और उसने सटीक व प्रभावशाली जबाब दिए। चेयरमैन ने आगे रमाशंकर से पूछा, "हम आपको इस नौकरी के लिए क्यों ऑफर दें, जब कि हमें आईआईटी वाले बच्चे मिल रहे हैं जो अंग्रेजी भी अच्छी बोलते हैं।" रमाशंकर ने कहा, "सर अंग्रेजी तो एक भाषा है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि किसी को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं तो वह असफल है।

जापान, रूस व चीन जैसे देशों ने अपनी भाषा को अपनाकर तरक्की की है और रही बात सर एक जिले को संभालने की, तो किसी भी कार्य को करने के लिए आदमी की ईमानदारी और उसकी क्षमता मायने रखती है ना कि कोई भाषा। सर आप जानते हैं कि जब एक चाय वाला पूरा देश चला सकता है, तो क्या हिंदी माध्यम से पढ़ने वाला व्यक्ति एक जिला नही संभाल सकता है। आज हमारे प्रधानमंत्री जी देश-विदेश के दौरे पर जाते हैं तो हर जगह हिंदी में बात करते हैं और सारा विश्व उनको सम्मान देता है।" रमाशंकर की बातों से सभी प्रभावित हुए।

जब यूपीएससी का परिणाम आया तो अपना परिणाम देखने रमाशंकर व उसके जैसे कई छात्र यूपीएससी भवन के बाहर खड़े थे। जो भी अपने परिणाम को देख रहे थे सब मायूस होकर निकल रहे थे। इस पर एक छात्र ने कहा कि इस बार तो हिंदी माध्यम का परिणाम बहुत ही खराब रहा है। रमाशंकर ने परिणाम को देखा तो उसका पहली ही लिस्ट में चयन हो गया था। रमाशंकर खुशी से हवा में उछल गया, क्योंकि उसके जीवन में खुशियां ही खुशियां आ गई थीं। सारी बातें सोचते– सोचते रमाशंकर यादों के

भंवर से बाहर निकल आया और अपने गांव पहुंच गया। वह जैसे ही गाड़ी से उतरा, तो गांव के लोगों ने उसे अपने कंधों पर बैठा लिया और उसे समारोह स्थल की ओर ले गए। गांव के स्कूल के प्रधानाचार्य ने रमाशंकर को माला पहनाई व स्वागत किया। इस अवसर पर रमाशंकर के ताऊजी भी उपस्थित थे। ताऊजी ने उसको गले से लगाया और बोले, "बेटा मुझे माफ करना। मैं कितना गलत था जो हमेशा तुम्हारा और तुम्हारे पिताजी का अपमान करता था।" उसके बाद प्रधानाचार्य ने कहा, "आप स्कूल के बच्चों को संबोधित करो।"

रमाशंकर ने कहा "बच्चों, जीवन में कभी संघर्ष करने में पीछे मत हटो। तुम्हारे अंदर जो भी योग्यता है उसको देखो, समझो और उसी के आधार पर मेहनत करो। यह जरूरी नहीं कि अगर कोई डॉक्टर, इंजीनियर है तो तुम भी वही करो। तुम कोई भी काम करो उसे मेहनत, ईमानदारी व लगन से करो। कभी भी अपने दिमाग में नकारात्मकता का ताला मत लगने दो और हमेशा अपने जीवन में सकारात्मक रवैया रखो।"

श्री राकेश कुमार
तकनीशियन/डी, प्रचालन, तापबिघ-1व2

विचार- एक जीवन शक्ति

हमेशा की तरह मैंने अपना पेपर उठाया और पढ़ने बैठा। मेरी नजर एक चित्र पर पड़ी। मैं मन ही मन उसके बारे में सोचने लगा कि यह चित्र क्या प्रतीत हो रहा है। मेरे मन में अजीब-अजीब ख्याल आने शुरू हुए, मानो अपने आप में खो जाओ। अपने दिमाग पर ताला हो तो हम कुछ सोच ही नहीं पाते। अपने चेहरे पर प्रश्नचिह्न आ जाता है, क्योंकि हम अपने विचारों में खोए रहते हैं। दरअसल आपका चेहरा ही आपके व्यक्तित्व का, आपके मन के विचारों का परिचय देता है। अच्छे और सात्विक विचारों वाले व्यक्ति का रूप-रंग कैसा भी क्यों न हो, एक ओज-सा चेहरे पर रहता है। अपने खयालों से बाहर आना और वर्तमान में जीना हमारे ही हाथ में है। हम अपने मन में उमड़े विचारों को सही दिशा नहीं दे पाते, इसलिए हम खोए रहते हैं। विचारों में बड़ी शक्ति होती है। प्रायः हर व्यक्ति के मन में महत्वाकांक्षाएं उठती हैं। क्या ये सब व्यर्थ हैं? क्या उनको साकार नहीं किया जा सकता ? क्या उनका कोई अस्तित्व नहीं है ? क्या सपने देखने से वे पूरे हो पाएंगे ?

सत्य तो यह है कि इस प्रकार की तमाम भावनाएं दिव्य होती हैं। वे जीवनदायिनी हैं। वे सब आपकी कार्य शक्ति को प्रोत्साहित करती हैं। अपनी विचार-शक्ति और भावनाओं के कारण ही मनुष्य संसार के अन्य प्राणियों में श्रेष्ठ है। चित्र को देखते-देखते एक खयाल मेरे दिमाग में आया, "मैं कुछ विचार ही न कर पाऊं तो क्या होगा?" सोचने लगा अगर मनुष्य के मन में कल्पनाएं न हों, विचार- शक्ति न हो, तो वह जीवन में उन्नति नहीं कर सकता। मनुष्य में अनेक शक्तियां विद्यमान हैं। किसी विशेष अवसर पर अथवा घटना पर उसकी सोई शक्तियों को झकझोर दिया जाता है। अनेक विद्वानों और महापुरूषों की सफलता का राज उनके जीवन में घटित होने वाली घटनाएं ही हैं। जब आप पूरी ताकत से किसी वस्तु की अभिलाषा करते हैं, तो वह आपको अवश्य मिल जाती है। इसमें आपकी तीनों शक्तियां लगती हैं, मन, वचन और कर्म। मन से इच्छा, इच्छा से विचार और विचार से कर्म जन्म लेता है। जब हम इस कर्म को वचन या फिर प्रतिज्ञा लेकर (या मानकर) अगर करते हैं कि मैं इसे प्राप्त करके रहूंगा, तो अवश्य ही वह मिल जाती है या प्रकट हो जाती है। विचारों को सही मानना और उस दिशा में प्रयत्न करना जरूरी है। मुझे अतीत से याद आ गया कि कुछ साल पहले इसी दिशा में मैंने भी कदम बढ़ाया था, आम के पेड़ लगाने की इच्छा की और मैंने उसे जमीन में बो दिया। उसके साथ-साथ कुछ और पौधे भी उग आए थे जैसे अमरूद, अनार और सीताफल के। मैंने उनको संभालकर बढ़ने दिया; उनका खाद और पानी बराबर बनाए रखा, जब तक मैं 2015 में टैप्स 3व4 कॉलोनी में शिफ्ट नहीं हुआ। मेरे मन में जो विचार उमड़े, उसमें पहले तो जिज्ञासा थी कि आम का पेड़ बना रहे और बढ़ता रहे। पर जब मेरा घर छोड़ जाने का वक्त हुआ तो मन में बाकी पौधों को देखकर बेचैनी हुई कि इन सबका भी खयाल रखना होगा और कोई मेरे बाद यहां आ जाए जो इनको बढ़िया तरीके से बढ़ाए। ऐसा तभी हो सकता है, जब हम मन में उस कार्य के प्रति सुखमय विचार उत्पन्न करें और सकारात्मक विचार आने दें। इसकी पहल आपको ही करनी होती है और यह हमें प्रकृति हमेशा से बताती आ रही है। घर खाली करने के बाद मैंने भी भगवान का नाम लेकर उन सब पौधों के लिए

सकारात्मक सोच रखी और प्रयास किए। मैंने बारिश के दो साल तक उन सब पौधों के लिए जमीन खुदाई, खाद डालना और बरसाती पानी की व्यवस्था करवाई, आज वहां वे सारे पौधे पेड़ बनकर खड़े हैं। वो पेड़ मेरे जीवन की खरी कमाई की तरह हैं कि आज मैं उन सबको रोज हवा में लहराते हुए देख पा रहा हूं। एक किताब में मैंने पढ़ा था कि जो विचार आपके जीवन को सुखमय, महत्वपूर्ण बनाने वाले हों, उनको कभी मत रोकिए। चींटी को देखिए, चिकनी दीवार पर चढ़ते समय वह कितनी बार फिसल-फिसलकर गिरती है, पर वह अपने दिमाग से प्रयास जारी रखती है और अंततः चढ़ ही जाती है। इस चित्र को देख मैं सोच में पड़ गया कि क्या मैंने अपने दिमाग का ताला अब तक खोला नहीं? इससे यह स्पष्ट हो रहा था कि हमें दिमाग को सही दिशा में सोचने का बराबर अभ्यास करते रहना चाहिए। बराबर अभ्यास से तो जड़मति भी विद्वान हो जाता है। कभी-कभी हम विरूद्ध विचार के प्रति अपना रूख मोड़ देते हैं और खो जाते हैं कि हमने इतनी मेहनत की; हम बड़े बदनसीब हैं; भगवान की नजर में हमने पहले कुछ गलत किया होगा, इसलिए अब यह भगवान का ही दिया दुख है जिसे हमें भुगतना है। ये सारे विचार जब हमारे मन में आते हैं, तो इनको गलत विचार मानकर इन्हें मिटाना, हटाना चाहिए। यह निराशाजनक चेतना को जन्म देते हैं और हमारे मस्तिष्क पर ताला लगा देते हैं।

सच पूछो तो इस ताले की चाबी हम सबके पास ही है और वह यह कि ऐसे विचारों को उत्पन्न होते ही हटा दो और अपने लक्ष्य के प्रति सजग हो जाओ। जब तक आप अपने विचारों में अपना दोषपूर्ण, त्रुटिपूर्ण दुर्बलस्वरूप देख पा रहे हो, तब तक आप निश्चित ही खुद एक आदर्श नहीं बनना चाहोगे और सिर्फ सामने रखे आदर्श की तारीफ में उलझे रहोगे। हमें हमेशा चाबी घुमाकर देख लेना चाहिए कि "हमारी दिमाग की घड़ी बंद तो नहीं है न?" अब मैंने पाया कि प्रकृति की महानशक्ति सबमें छिपी पड़ी है और जब अवसर पाकर बाहर निकलती है तो उस व्यक्ति को महान बनाकर ही दम लेती है। ठीक उसी प्रकार जैसे मैंने कहानी में पढ़ा था, जैसे सिंह का बच्चा जब भेड़ों के झुंड में पहुंचा और अपने को भेड़ समझकर उन्हीं के बच्चों के साथ कूदता-फिरता था। खा-पीकर वह इतना बड़ा हो गया कि कई बार तो भेड़ें भी उससे डर जाती थीं। तभी जंगल में कहीं से एक बयस्क शेर आ गया। सामने की ऊंची पहाड़ी पर खड़ा होकर वह दहाड़ने लगा। उसकी भयानक गर्जना सुनकर भेड़ें थर-थर कापने लगीं। लेकिन उस गर्जन की ध्वनि जैसे ही उस बच्चे के कानों में पड़ी, उसके ह्रदय में विभिन्न भाव उमड़ने लगे। भेड़ों में पला बड़ा शेर का बच्चा भी अपने पूरे वेग से दहाड़ने लगा। कहने का तात्पर्य यह है कि सिंह की दहाड़ ने उसके प्राकृतिक स्वभाव को जागृत कर उसके दिमाग पर पड़े ताले को खोल दिया। मेरे दिमाग की बत्ती भी जलना शुरू हुई कि जिस पल तुम अपनी शक्तियों का स्मरण करोगे, उनको जान जाओगे, उस समय तुम साधारण मनुष्य नहीं रह जाओगे। सारी नवचेतना तुम्हारा इंतजार कर रही है कि तुम आगे बढ़ो और इस जीवन को उन्नत करो।

अपने द्वारा देखे गए नए सपनों को साकार करने के लिए जिस तरह कोलंबस ने नई भूमि को खोज निकालना जारी रखा, एडिसन जैसे वैज्ञानिक ने नवीनतम आविष्कारों की खोज की। मैं अब जान रहा था कि यह चित्र मुझे समझा रहा है कि विचारों का विश्लेषण होना जरूरी है। तो चलो हम नवीन विचारों का संकलन करें, किसी बात पर सीधा विश्वास करने की बजाय पहले अपने दिमाग से उनका आकलन करें, परखें और यदि वह तुम्हारे द्वारा किए जाने पर हमारे साथ-साथ इस समाज की अंध मानसिकता को बदल दे तो तुम, हम और सारा समाज खुद कामयाब हो जाएंगे।

श्री परशुराम खरटमल
वरिष्ठ तकनीशियन/ एच, टीएसयू, तापबिघ3व4

विचारों की शक्ति

मुझे एक सच्ची घटना याद आती है जो मैंने कभी बचपन में सुनी थी। एक कैदी को कत्ल के इल्ज़ाम में मौत की सजा सुनाई गई। उसकी फांसी के एक दिन पहले डॉक्टरों की एक टीम उसके पास गई और उन्होंने उसे बताया कि जब उसे कल फांसी दी जाएगी, तो उसके गले की तीन हड्डियां टूटेंगी और डेढ़ मिनट तक वह दर्द से छटपटाता रहेगा और फिर उसकी मौत हो जाएगी। कैदी ने पूछा कि आखिर वे क्या कहना चाहते हैं ? डॉक्टरों ने कहा, "हम तुम्हारे साथ एक रिसर्च करना चाहते हैं, तुम्हें फांसी न देकर हम तुम्हें एक कोबरा सांप से डंसवा देंगे। इसमें तुम्हें बस एक सुई चुभने के बराबर दर्द होगा और तुम 5 से 15 सेकंड में मर जाओगे। तुम्हें डेढ़ मिनट तक छटपटाना नहीं पड़ेगा। लेकिन सब कुछ तुम्हारे हाथ में है, अगर तुम अनुमति दोगे तभी हम ऐसा करेंगे, वर्ना फांसी से डेढ़ मिनट तक दर्द में ही मरना होगा।" कैदी को भी यह तरीका ठीक लगा। उसने डेढ़ मिनट तक दर्द झेलने की बजाय 15 सेकंड में मरना उचित समझा और बोला "ठीक है, अगर मरना ही है, तो यही तरीका सही।"

अब शुरू होता है दिमाग का खेल। अगले दिन उसे एक कुर्सी पर बैठाया गया। उसके सामने एक काले रंग का भयानक-सा किंग कोबरा सांप लाकर रख दिया गया और उससे कहा गया कि यह दुनिया के सबसे जहरीले सांपों में से एक है। यह डंसेगा और उसकी मौत हो जाएगी। आप कैदी की मनस्थिति समझ सकते हैं। उसके पसीने छूटने लगे। उसके दिमाग में अब यह चलने लगा कि सांप आएगा डंसेगा और मैं मर जाऊंगा। मौत को सामने देखकर उसका चेहरा सूखकर छोटा हो गया। उसके करीब सांप को लाकर रख दिया गया और उसका चेहरा व गर्दन उस काले कपड़े से ढंक दिया गया, जो फांसी के वक्त पहनाया जाता है। इसके बाद डॉक्टरों ने उससे कहा कि अब सांप तुम्हारे पैरों की तरफ बढ़ रहा है। यह तुम्हें डंसेगा और तुम मर जाओगे। यह कहकर उसके पैर में सांप से न डंसवाकर सिर्फ एक सुई चुभा दी गई। वो कैदी उसी समय मर गया। इससे ज्यादा आश्चर्य की बात तब हुई, जब उसका पोस्टमार्टम किया गया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में यह पाया गया कि उसकी मौत किसी ज़हरीले ज़ख्म के कारण हुई है, जो अक्सर सांप के काटने से होता है।

यह सब दिमाग का खेल था। एक दिन पहले से ही उसके दिमाग में यह बात चलाई जा रही थी कि उसे सांप से डंसवाकर मारा जाएगा। दिमाग उसी दिशा में सोचने लगा और दिमाग ने एक सुई के चुभन को भी सांप का डंसना समझकर खुद को खत्म कर लिया। यह है विचारों की शक्ति। जैसे आप दिमाग में विचार लाते हैं, आपको वैसा ही रिजल्ट मिलता है। इसलिए हमेशा सजगता से पॉजिटिव बातों को ही दिमाग तक आने दें और सिर्फ पॉजिटिव ही सोचें। वर्ना एक बार दिमाग में निगेटिविटी प्रवेश कर गई, तो दिमाग उसी दिशा में सोच-सोच कर आपके अंदर निराशा भर देगा। हमारी भावनाएं हमारे दिमाग और हमारे व्यवहार को

प्रभावित करती हैं और हमारी सफलता या असफलता का कारण बनती हैं।

यदि दिल में होगा कि मैं ये काम नहीं कर सकता, यह तो मेरी काबिलियत से बड़ा है, ये मेरी औकात से बाहर है, तो सच मानिए, सारी कोशिशों के बावजूद भी उसे पूरा नहीं कर पाएगा और अगर मैंने सोच लिया कि मैं कर सकता हूं, तो मैं पूरा दिल लगाकर कोशिश करूंगा। जहां अड़चन आएगी वहां रास्ता ढूंढूगा। किसी से सलाह लूंगा, किसी से सहायता लूंगा, पर काम पूरा करके दिखाऊंगा। यह भी विचारों की शक्ति है।

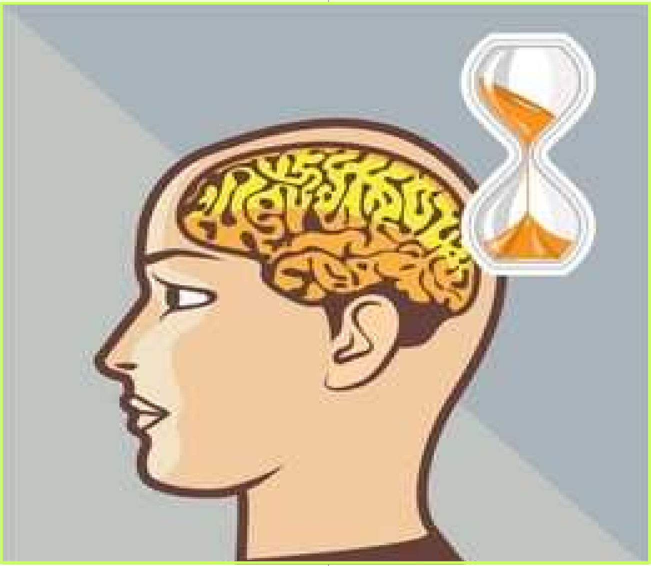

हमारा दिमाग हमारे विचारों से, हमारी भावनाओं से चलता है। इसलिए यह समझना आवश्यक है कि भावनाओं को बदले बिना या उन पर नियंत्रण पाए बिना आप सफलता की चाबी हासिल नहीं कर सकते। विचारों का सीधा प्रभाव हमारे व्यक्तित्व, जीवन के निर्माण एवं ऊर्जा पर पड़ता है। सकारात्मक ऊर्जा के प्रबल होने से हम किसी भी कार्य को पूरी लगन एवं तन्मयता के साथ कर पाते हैं। इसके विपरीत नकारात्मक ऊर्जा हमारे विवेक को क्षीण कर देती है। इससे हमारी निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित होती है। जब हम सही निर्णय नहीं ले पाते, तब हमारा जीवन दिशाहीन हो जाता है। लिहाजा हम सही दिशा में अपनी सफलता के लिए प्रयास भी नहीं कर पाते।

एक और कहानी मैंने बचपन में सुनी थी--एक राजा था। शत्रु उस पर बार-बार हमला करते। उस पर शत्रुओं ने लगातार छह बार हमला किया और सातवीं बार राजा हार गया। वह बहुत ही हताश हो गया और जंगल में जाकर एक गुफा में छिप गया। वहां उसे थकान की वजह से नींद आ गई। जब वह जागा तो देखा कि एक मकड़ी सामने की दीवार पर जाला बना रही है। वह इस कोशिश में कई बार असफल हुई, लेकिन उसने बार-बार उठकर प्रयास किया और अंततः उसने जाला बना लिया। मकड़ी के इस उपक्रम को देख राजा को विचार आया कि जब एक छोटी-सी निरीह मकड़ी बार-बार पुनः प्रयास से जीत सकती है, तो मैं क्यों नहीं? राजा गुफा से बाहर निकला। उसने पुनः अपनी सेना संगठित की। पूरे मनोयोग से युद्ध किया। फिर वह जीत गया। यह विचार की ही शक्ति थी कि एक छोटी-सी मकड़ी राजा के लिए प्रेरणास्रोत बन गई।

मनीषियों का मत है कि नकारात्मक विचार मनोमय कोष को विकृत कर देते हैं। परिणामस्वरूप प्राणमय कोष पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जब प्राण विचलित हो जाता है, तब स्थूल शरीर पर यह विकृति रोग के रूप में दिखाई देती है। अतः हमेशा उत्तम विचारों को ही अपने जीवन में जगह देनी चाहिए, ताकि हम स्वस्थ और समृद्ध रह सकें।

श्री रविशंकर महाराना
वैज्ञानिक सहायक/ई, प्रचालन, तापबिघ- 1व2

ईर्ष्या से प्रेरणा

उसकी साड़ी मेरी साड़ी से सफेद कैसे? ये जुमला हमने मजाक में कई बार सुना है, जिसका अर्थ हम ईर्ष्या के संदर्भ में लेते हैं। ईर्ष्या यानी जलन या एक तरह का द्वेष परंतु किससे और किस प्रकार का? जब हमारे मन की नहीं होती, तो हम उदास, निराश, दुखी या हताश हो जाते हैं और जिस कारण ये सब होता है। ईर्ष्या उम्र के हर पड़ाव पर हो सकती है, बाल्यकाल में होने वाली ईर्ष्या स्थायी नहीं होती पर जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है, हमारी संवेदनाएं भी प्रभावित होती जाती हैं।

कार्यस्थल पर, पारिवारिक जीवन में या फिर किसी निजी प्रसंग में यह ईर्ष्या अंजाने कदमों से दस्तक तो देती है, पर नासूर बनकर आपको अंदर से खोखला कर देती है। जिससे ईर्ष्या है, उसे तो कोई विशेष फर्क पड़ता नहीं, वरन आपकी शारीरिक और मानसिक सेहत गिरती जाती है। उसे तरक्की कैसे मिली, जबकि हम उससे ज्यादा लायक थे? उसे प्रेम कैसे मिला, जबकि मैं उस व्यक्ति को उससे अधिक प्रेम करता था/करती थी? उसे इतनी संपत्ति, इतनी प्रतिष्ठा, इतना वैभव कैसे और मुझे क्यों नहीं. इन सारे निरर्थक प्रश्नों के लिए हम किसी ना किसी को अपनी ईर्ष्या के निशाने पर ले आते हैं। माना कि जो मिलना था वह किसी और को मिला, तो इसके कारण भी कई हो सकते हैं- जैसे हमारी मेहनत में कमी, हमारी लगन में कमी, कभी-कभी हम भाग्य पर भी ये बात छोड़ सकते हैं कि समय से पहले और भाग्य से अधिक किसी को कुछ नहीं मिलता।

अब बात करते हैं प्रेरणा की, ईर्ष्या का प्रेरणा से क्या संबंध? नहीं है, तो बना लो..........जी सही पढ़ा आपने। नहीं है, तो अवश्य बना लीजिए....जिससे ईर्ष्या है उसे ही प्रेरणा बनाकर तो देखिए....द्वेष प्रेम में ना बदल जाए तो कहना। हमारी ईर्ष्या जब हमारी प्रेरणा बनेगी, तो निश्चित रूप से हममें सकारात्मक परिवर्तन आएंगे, हम बेहतर ढंग से विश्लेषण करने लगेंगे, तब हम किसी में दोष नहीं देखेंगे। हम सिर्फ खुद को बेहतर बनाने के प्रयास में होंगे। तब हमारे मन में क्लेश नहीं, शांति होगी। दोष या दंड नहीं, क्षमा की भावना जन्म लेगी। दुर्भावना के स्थान पर सद्भावना और सद्बुद्धि बढ़ेगी। हमारे व्यक्तित्व में एक निखार आएगा और हम नए सिरे से जीवन पथ पर आगे बढ़ने में सक्षम होंगे।

हमें बस इतना करना है कि अपनी नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक ऊर्जा में बदलना है। परिणाम स्वयं अनुभव कीजिएगा। प्रेम में ईर्ष्या सबसे घातक और मानसिक पीड़ादायक होती है। परंतु जो प्रेम का सही अर्थ जानते हैं, उनके लिए कदापि नहीं....तब ईर्ष्या को प्रेरणा मानकर हमें समझना चाहिए।

मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं।

प्रेम गली गति सांकरी जा में दो ना समाहिं।।

यहां "मैं" को अहंकार या ईर्ष्या समझ लीजिए। जब अपने प्रेम को ही हरि/ईष्ट मान लोगे तो किसी और से ईर्ष्या कभी नहीं होगी।

श्रीमती सीमा शिर्के
ऊर्जा महिला मंडल, तामस्थ

हमारी प्यारी लाडो

आज लाडो बहुत खुश थी। पापा का हाथ पकड़ चल रही थी। कभी पापा लाडो के कदमों से कदम मिलाकर धीरे चलते, तो कभी लाडो अपने नन्हें - नन्हें पैर जल्दी – जल्दी चलाकर पापा के साथ चलने की कोशिश करती।

सादे मामूली से पर साफ-सुथरे कपड़े, पांव में प्लास्टिक की सैंडिल, बिना तेल के पर ठीक से बाल बनाए हुई लाडो जैसे प्लास्टिक की गुडिया लग रही थी। पापा का हाथ थामे छोटी-सी लाडो जैसे घने पेड़ की छांव में चल रही थी। लाडो इस कदर शांत चुपचाप थी, मानो कोई बहुत बड़ा समझदार बच्चा हो। चेहरा शायद ना बोले, उतनी वह दो चमकती आंखें बोल रही थीं। स्ट्रीट लाइट, रास्ते पर लगी दुकानें, चाय की टपरी, कपडे की हाथगाड़ी, वड़ापाव की दुकानें, चायनीज भेल का ठेला, फूलों की माला बनाने में व्यस्त फूलवाला, ये कुछ भी लाडो की नजरों से छूट नहीं रहा था। आखिरकार लाडो के पापा भेलपूरी की स्टॉल पर रूके। लाडो के लिए पापा ने गोलगप्पे मँगवाए। वह यह जानती थी कि मां के काम में हाथ बंटाना, पढ़ाई करना और अपने रोते-शरारती छोटे भाई 'लालू' को चुप कराना, इन सब कामों को पूरा करने के पुरस्कारस्वरूप थे वो 'गोलगप्पे'।

समझदार– सी पांच साल की लाडो, शांति से पापा की बगल में खड़े होकर गोलगप्पे खाने के लिए अपनी बारी का इंतजार कर रही थी। पर......पर अपने आप को रोकने की लाख कोशिशों के बावजूद लाडो की नजर बार– बार बगलवाली आईस्क्रीम की ठेली पर जा रही थी। तभी पापा ने लाडो को आवाज लगाई। गोलगप्पे तैयार थे। हल्की– सी मुस्कान के साथ पापा को शुकिया अदा करते हुए लाडो आगे बढ़ी। बस, एक बार आईस्क्रीम की दुकान की ओर मुड़कर देखा, फिर वापस पापा की तरफ बढ़ गई, ना ही कोई हठ, ना ही कोई शिकायत। शांत रहने वाली....प्यारी-सी....छोटी-सी लाडो...उम्र से पहले ही समझदार....अपनी हसरतों को अपनी जरूरतों के हिसाब से मोड़ने वाली....सदा मुस्कान चेहरे पर लिए.... हमेशा शुक्रगुजार रहने वाली...हर एक घर में मिलती है ऐसी 'लाडो'....।

पापा की गुडिया बनती,
मां की सहेली बनती,
बेटी इसलिए 'लाडो' कहलाती
हमारी प्यारी लाडो....।

श्रीमती स्वाती विवेक कुंभार
सदस्या, ऊर्जा महिला मंडल, तारापुर

रक्तबीज

रक्तबीज सा बनना है अब।
अपने हजार रूप साथ रखना है अब ।
अपनी ही कमजोरियों से लड़कर,
उन्हीं को अपना शस्त्र बनाना है अब।
कंकड-पत्थर, पथ से लड़कर,
राह-राह, डगर-डगर चलते रहना है अब।
बहुरूपियों से डर कैसा,
रुद्रा बनकर शंखनाद करना है अब।
रक्तबीज सा बनना है अब।
अपने हजार रूप साथ रखना है अब।

श्रीमती स्वाती विवेक कुंभार
सदस्या, ऊर्जा महिला मंडल, तारापुर

शब्दावली

प्रशासनिक

Ill treatment	दुर्व्यवहार
Illustrated	1. सचित्र 2. सोदाहरण
Illustration	1. चित्र 2. उदाहरण
Ill will	वैमनस्य
Image	1.छवि 2.प्रतिमा 3.प्रतिबिंब
Imbalance	असंतुलन
Immaterial	तत्वहीन, सारहीन
Immature	अपरिपक्व
Immediate	1. तत्काल 2. आसन्न
Immediate action	तत्काल कार्रवाई
Immediate employer	आसन नियोक्ता
Immediately preceding	ठीक पिछला, ठीक पहले
Immediate officer	आसन्न अधिकारी
Immigrant	आप्रवासी
Immigration authority	आप्रवास प्राधिकारी
Immigration clearance	आप्रवास अनापत्ति
Immigration laws	आप्रवास विधि
Immigration service	आप्रवास सेवा
Immigration visa	आप्रवास वीजा
Immoral	अनैतिक
Immoral act	अनैतिक कार्य
Immovable	अचल
Immovable property	अचल संपत्ति
Immune	1. उन्मुक्त 2.प्रतिरक्षित
Immunity	1. उन्मुक्ति 2. प्रतिरक्षा
Impact	प्रभाव
Impartial	निष्पक्ष
Impartiality	निष्पक्षता
Impartial judgement	निष्यक्ष निर्णय
Impeachment	महाभियोग
Impediment	अडचन, बाधा
Imperative	लाजिमी, अनिवार्य
Impersonation	प्रतिरूपण
Implementation	कार्यान्वयन, परिपालन

तकनीकी

Highly enriched uranium	उच्च संवर्धिम यूरेनियम
Highly reliable product	अत्यधित विश्वसनीय उत्पाद
High magnification	उच्च आवर्धन
High plasma current	उच्च प्लाज्मा धारा
High population zone	घनी आबादी क्षेत्र
High power combiner	उच्च शक्ति संयोजक
High pressure heater	उच्च दाब तापक
High pressure pipe line	उच्च दाब पाइप लाइन
High pressure system	उच्च दाब तंत्र
High radiation area	उच्च विकिरण क्षेत्र
High sensitivity	उच्च संवेद्यता
High temperature reactor	उच्च ताप रिएक्टर
High tension cable	उच्च विभय केबल
High transmissivity	उच्च संचरणशीलता
High voltage test probe	उच्च वोल्टता परीक्षण प्रोब
High voltage isolation	उच्च वोल्टता विलगन
High voltage unit	उच्च वोल्टता इकाई
High alpha decay	अवरुद्ध ऐल्फा क्षय
Hindrance	बाधा, रुकावट
Histogram	आयतचित्र
Histology	औतिकी, ऊतक विज्ञान
Histolysis	ऊतक-लयन
Hoist	उच्चालक
Holandite	होलान्डाइट
Holder	होल्डर, धारक
Holding reductant	धारक अपचायक
Hold-up tank	धारक टंकी
Hole	होल, छिद्र, विवर
Hollow bar	खोखली छड
Homeopathic map	पूर्ण सममितिक प्रतिचित्र
Homeopathic practitioner	होमियोपैथिक चिकित्सक
Homogenous	समांगी, सजातीय
Homology	समजातता, समजातीयता
Hood	छत्रक, हुड

नई नियुक्ति

नई नियुक्ति के फलस्वरूप तारापुर महाराष्ट्र स्थल पर कार्यभार ग्रहण करने वाले निम्नलिखित साथियों का हार्दिक स्वागत है।

क्र सं	नाम	पदनाम	अनुभाग	कार्यभारग्रहण तारीख
1	डॉ. सुश्री मधुमिता एस.एम	चिकित्सा अधिकारी/सी	अस्पताल	28.03.2024

आगमन

स्थानांतरण के फलस्वरूप तारापुर महाराष्ट्र स्थल पर कार्यभार ग्रहण करने वाले निम्नलिखित साथियों का हार्दिक स्वागत है।

क्र सं	नाम	पदनाम	अनुभाग	कार्यभारग्रहण तारीख	कहां से आए
1	श्री सुबास चंद्र पात्रो	फोरमैन/ए	आर एंड डी	23.10.2023	एनएपीएस
2	डॉ.(श्रीमती) कीर्ति माथुर	चिकित्सा अधिकारी/एफ	अस्पताल	27.10.2023	केएपीएस
3	श्री अतनु कुमार सेन	प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)	वित्त एवं लेखा	13.12.2023	केकेएनपीपी
4	श्री विशाल धाकपाडे	वरिष्ठ प्रबंधक(सीएमएम)	सीएमएम	14.12.2023	केएपीएस
5	श्री उमेश एस नंदनवार	वरिष्ठ प्रबंधक(सीएमएम)	सीएमएम	01.02.2024	केएपीएस

आगंतुकों का विवरण

क्र सं	माह	सामान्य आगंतुक	विदेशी आगंतुक	वीआईपी आगंतुक	कुल
1	अक्टूबर	1083	8	50	1141
2	नवंबर	1140	2	8	1150
3	दिसंबर	1288	2	48	1338
4	जनवरी	1818	0	23	1841
5	फरवरी	1280	9	6	1295
6	मार्च	1088	13	13	1114
				कुल	7879

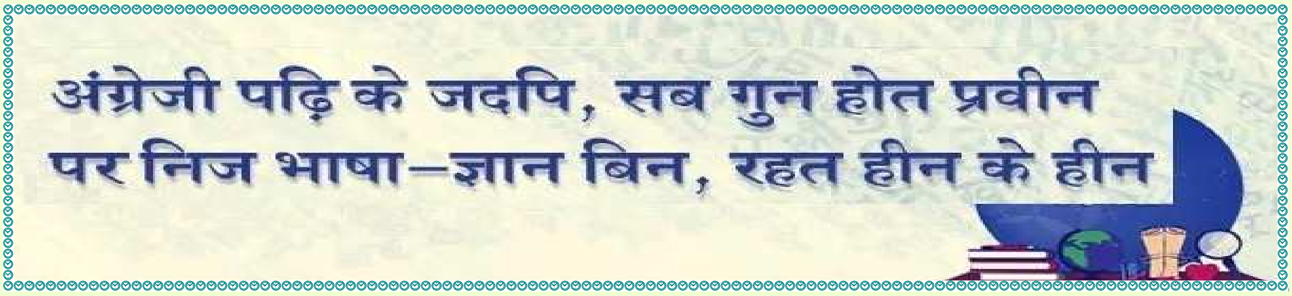

मधुर स्मृतियाँ

स्थानांतरण

तारापुर महाराष्ट्र स्थल से स्थानांतरित निम्नलिखित कार्मिकों के भावी जीवन के लिए अणुभारती की ओर से ढेर सारी मंगल कामनाएं।

क्र सं	नाम	पदनाम	अनुभाग	स्थानांतरण दिनांक
1	श्रीमती लक्ष्मी साहु	वरिष्ठ प्रबंधक (सं.एवं सा.प्र.)	सीएमएम	20.10.2023
2	डॉ. कीर्ति शर्मा	चिकित्सा अधिकारी/जी	चिकित्सालय	25.10.2023
3	श्रीमती ज्योति भट्ट	वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2(मासं)	मासं	02.11.2023
4	श्रीमती शिल्पा नार्वेकर	वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ग्रेड-1	मासं	02.11.2023
5	श्री एस.एन. पाटील	वरिष्ठ प्रबंधक(वित्त एवं लेखा)	वित्त एवं लेखा	23.11.2023
6	श्री प्रकाश एम.खरात	वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)	वित्त एवं लेखा	04.12.2023
7	श्री सन्नी सिंगला	वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)	वित्त एवं लेखा	08.12.2023
8	श्री दिनेश चंद गुप्ता	अधीक्षक (गुणवत्ता आश्वासन)	प्रबंधन	18.12.2023
9	श्री सौरभ मिश्रा	वैज्ञानिक अधिकारी/सी	प्रचालन	10.01.2024
10	श्री केदार एम. भावे	अपर मुख्य अभियंता	ई एंड यूएस	23.02.2024
11	श्री पी.एन. कांबले	फोरमैन/बी	स्वास्थ्य भौतिकी	08.03.2024

सेवानिवृत्ति

तारापुर महाराष्ट्र स्थल से सेवानिवृत्त साथियों की सेवाओं के प्रति आभार प्रकट करते हुए अणुभारती उनके सुखद भविष्य की कामना करती है।

क्र सं	नाम	पदनाम	अनुभाग	सेवानिवृत्ति दिनांक
1	श्रीमती सुवर्णा अजीत पाटील	वरिष्ठ सहायक ग्रेड-2(वित्त)	वित्त एवं लेखा	30.11.2023
2	श्री पी.बी.चौधरी	फोरमैन/बी	विद्युत	30.11.2023
3	श्री जे. एन. चौधरी	फोरमैन/डी	यांत्रिक अनुरक्षण	31.12.2023
4	श्री पी.आर. पाटील	फोरमैन/बी	सीएसजी	31.12.2023
5	श्री एम.डी. आरेकर	तकनीशियन/डी	सीएसजी	31.12.2023
6	श्री अनिल बी देशमुख	स्थल निदेशक, तामस्थ	प्रबंधन	31.01.2024
7	श्री गजानन आर. नंदनवार	निजी सचिव	अनुरक्षण अधीक्षक कार्यालय	31.01.2024
8	श्री प्रशांत एम. देशपांडे	वैज्ञानिक अधिकारी/जी	आर एंड डी	29.02.2024
9	श्री परेश एम. नायक	फोरमैन/बी1	नाभिकीय प्रशिक्षण केंद्र	29.02.2024
10	श्री अलेक्स सिक्वेरा	वरिष्ठ प्रबंधक (मा.सं)	मानव संसाधन	31.03.2024
11	श्री रविंद्र के तामोरे	फोरमैन/सी	सीएमएम	31.03.2024

क्र सं	नाम	पदनाम	अनुभाग	सेवानिवृत्ति दिनांक
12	श्री जे.ए. पाटील	वरिष्ठ कार्य सहायक/ए	सीएसजी	31.01.2024
13	श्रीमती प्रगति पी. मुकणे	सिस्टर-इन-चार्ज/बी	चिकित्सालय	31.03.2024
14	श्री एन.एम. शेख	वरिष्ठ निजी सचिव	अनुसंधान एवं विकास	31.03.2024
15	श्री आर.बी. सालशिंगीकर	फोरमैन/सी	तकनीकी सेवाएं	31.03.2024
16	श्री ए.जी. गोरे	फार्मासिस्ट/एफ	चिकित्सालय	31.03.2024

श्रद्धांजलि

'अणुभारती' अपने बिछड़े साथियों के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति और शोकग्रस्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

क्र सं	नाम	पदनाम	अनुभाग	दिनांक
1	स्वर्गीय श्री प्रमोद बी. मते	तकनीशियन/डी	यांत्रिक अनुरक्षण	23.10.2023
2	स्वर्गीय श्री जे.एस. आहेर	तकनीशियन/जी	परिवहन	10.03.2024

तापबिघ 1व2 में गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियां

तापबिघ 3व4 में गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियां

तामस्थ टाउनशिप में गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियां

डिजाइन : श्रीमती संगीता रावत, राजभाषा अनुभाग, तामस्थ